इकाई–2 : केशवदास

संरचना

2.0 कवि परिचय

2.1 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

2.2 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

2.2.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

2.2.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

2.2.3 निबंधात्मक प्रश्न

2.3 सारांश

2.4 अभ्यास प्रश्नावली

2.0 कवि परिचय

केशवदास तमाम विवादों के बावजूद भी हिन्दी रीति साहित्य के प्रथम आचार्य हैं, क्योंकि केशवदास कवि शिक्षा और रसिक शिक्षा के आचार्य हैं। जिसका प्रभाव स्वयं चिन्तामणि पर भी पड़ा है। महाकवि केशवदास का जन्म संवत् 1618 में हुआ और मृत्यु 1680 के आसपास हुई। इनके पिता का नाम काशीनाथ और पितामह का नाम कृष्णदत्त था। ये ओरछा–नरेश महाराज रायसिंह के भाई इन्द्रजीत सिंह के सभा पंडित थे। इनका परिवार संस्कृत निष्ठ था। संस्कृत भाषी परिवार में जन्म लेकर प्रचलित भाषा में कविता करने में इन्हें काफी जोर आता था –

'भाषा बोलि न जानिही, जिनके कुल के दास।
भाषा–कवि भी मन्दमति, तेहिं कुल केसवदास।।'

संस्कृत भाषा और साहित्य की चमत्कार प्रधान अंतिम पीढ़ी से सम्बद्ध केशवदास का ध्येय भाषा में वह सारी सामर्थ्य और शक्ति पैदा करना था, जिसे वे संस्कृत में समझते थे। इसका परिणाम "कविप्रिया" और रसिकप्रिया है। केशव में अर्थ के स्थान पर शब्द को अधिक महत्त्व दिया और साहित्य के क्षेत्र में संदेश और निर्देश को प्रायः बाहर करने का कार्य किया। उन्होंने कलात्मकता को मूल्यवत्ता प्रदान की।

बिहारी के पिता केशवराय से इनका कोई भी सम्बन्ध नहीं था। बेतवा नदी के किनारे के निवासी केशव की प्रतिष्ठा उनके जन्मकाल में ही हो गई थी। महाराज इन्द्रजीत सिंह द्वारा प्राप्त सम्मान और कवियों द्वारा उनका स्मरण उनके महत्त्व का ही प्रमाण है। डॉ. लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय ने इनको वैश्य लिखा है और डॉ. जगदीश गुप्त ने इनके भाई के नाम को इनके पिता का नाम बताया है। इनके भाई का नाम बलभद्र था जो स्वयं एक अच्छे कवि थे। केशव निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित थे जो इनके परिवर की परम्परा लगती है।

दरबार संस्कृत की परवर्ती काव्य परम्परा तथा काव्य शिक्षा का प्रभाव केशव पर भी व्यापक रूप से पड़ा। आश्रयदाता की प्रशंसा उन्हें भी करनी पड़ी। संस्कृत के परवर्ती चमत्कार प्रधान ग्रंथों का आधार लेकर उन्हें 'आदर्श' के रूप में मानस में निबद्ध करते हुए हिन्दी काव्य प्रेमियों के लिये रचना का आदर्श और सिद्धान्त प्रस्तुत करना केशव का उद्देश्य और कार्य दोनों ही था। इसमें केशव की अहंतुष्टि भी थी। वे सहज ही हिन्दी कवियों में अपने पाण्डित्य के बल पर और दरबार में अपने कौशल और चमत्कार के कारण पद, अर्थ और यश पाने में सफल हुए। केशव ने इस पूर्ति के लिये अपने ज्ञान और कौशल का पूरा–पूरा उपयोग किया। 'काव्यादर्श', 'शृंगारतिलक', 'साहित्य दर्पण', 'काव्यकल्पलता', 'अलंकार शेखर' व 'कविकल्पलतावृत्ति' को आधार मानकर केशव ने संस्कृत की काव्य पद्धति या रीति को 'कविप्रिया' के द्वारा हिन्दी में अवतरित किया।

'केशव अलंकार' को काव्य के भूषण रूप में स्वीकार करते हैं और इसीलिये वे अपने समय के संस्कृत पण्डितों की इसी धारणा से सहमत थे, कि काव्य की शोभा अलंकार है। केशव ने सामयिक रुचि और प्रवृत्ति के

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

अनुसार दानवीर, धर्मवीर आदि वीर रस के भेद किये हैं तथा भानुदत्त की "रसरंगिणी" का आधार ग्रहण करके नायिकाओं के नवीन भेद भी प्रस्तुत किये, किन्तु इन भेदों–प्रभेदों के पीछे तात्त्विक दृष्टि का अभाव रहा है। क्योंकि विवेकहीन मौलिकता का कोई महत्त्व नहीं होता है। इन सारे प्रयासों के मूल में केशव का लक्ष्य प्रायः सूक्ष्मातिसूक्ष्म सिद्धान्त और भेद की कल्पना करके प्रस्थान भेद को स्पष्ट कर देना था।

केशवदास की रचनाओं में 'छन्दमाला', 'रत्नावली', 'जहाँगीरजस चन्द्रिका' और 'वीरसिंह देव चरित्र' का भी उल्लेख है, परन्तु इनकी ख्याति का आधार 'कविप्रिया', 'रसिकप्रिया' और 'रामचन्द्रिका' ही है। इनकी अलंकार प्रियता, चमत्कृति और उक्ति वैचित्र्य आदि इन पुस्तकों में व्यापक रूप से विद्यमान है। वृद्धावस्था में बाबा शब्द सुनकर होने वाली मर्मान्तक पीड़ा उनकी रसिकता का ही पर्याय है।

वस्तुतः, केशव ने जो भी कुछ लिखा उसमें 'सुवरण' । (सुवरण का यहाँ अर्थ है सटीक वर्णमाला) श्लेष में अर्थ है– सुवर्ण और गोरा रंग। की खोज थी, परन्तु सुबरन का तात्पर्य यहाँ कदाचित् उक्ति के संदर्भ में अर्थवान है। रीतिकाल की कई–कई कविताओं से केशव के भावमय प्रसंग और उक्तियाँ महत्त्वपूर्ण हैं। मुद्रा, विरोधाभास, श्लेष और यमक अलंकार का प्रयोग चमत्कृति और वैदग्ध्य के लिये हुआ है। बाणभट्ट की भाँति दण्डकारण्य के वर्णन में परिसंख्या का प्रयोग किया गया है। रुपक एवं संदेह अलंकारों का प्रयोग अत्यन्त चमत्कार पूर्ण बन गया है। यथा –

चढ्यो गगन तरु धाय, दिनकर वानर अरुनमुख।
कीन्हों झुकि झहराय, सकल तारका कुसुम बिन।।

अलंकार प्रियता का प्रभाव, जैसा कि पण्डित कृष्णशंकर शुक्ल का कथन है, केशव के पात्रों पर भी पड़ा है। जनकपुर के स्त्री–पुरुष, वनमार्ग के लोग, जलदेवियाँ और स्वयं श्रीराम भी अलंकार युक्त भाषा बोलते हैं। केशव को सभी प्रकार की शास्त्रीय पद्धतियों का परिचय था। इसीलिये रीतिकाल के सभी कवियों से अधिक कल्पना शक्ति केशव में थी।

केशव रीतिकालीन कवियों के मुख्य प्रेरणास्रोत माने गये हैं। एक मार्गदर्शक के रूप में उनका योगदान स्वीकार ही नहीं अपितु शिरोधार्य किया जाता है। आचार्यत्व उनके कवि रूप को अधिक समर्थ बनाता है।

2.1 महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ

(रामचन्द्रिका से चयनित अंश)

(1)
सरस्वती वन्दना

बानी जगरानी की उदारता बखानी जाय,
ऐसी मति कहौ धौं उदार कौन की भई।
देवता, प्रसिद्ध सिद्ध ऋषिराज तपवृद्ध,
कहि–कहि हारे सब, कही न केहुँ लई।
भावी भूत वर्तमान जगत बखानत है,
केशोदास केहुँ न बखानी काहूँ पै गई।
वर्णै पति चारिमुख, पूत वर्णै पाँच मुख,
नाती वर्णै षट मुख, तदपि नई–नई।

शब्दार्थ – बानी = सरस्वती, जगरानी = राजराजेश्वरी, मति = विवेक, पति = चारमुख वाले ब्रह्माजी, पूत = पंचमुखी शिवशंकर, नाती = छः मुख वाले कार्तिकेय, तदपि = फिर भी।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति रस तरंगिणी' के 'केशवदास' नामक पाठ के 'सरस्वती वन्दना' से उद्धृत है, जिसमें कवि केशव ने ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती की स्तुति महिमा की अत्यन्त रोचक स्थिति को अभिव्यक्ति दी है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

व्याख्या – कवि केशवदास विद्या की अधिष्ठात्री माँ सरस्वती की स्तुति करते हुए कहते हैं कि सरस्वती तो विश्वेश्वरी है, राजराजेश्वरी हैं इनकी महिमा का वर्णन करना आसान नहीं है अर्थात् इस संसार में कोई भी इतना प्रखर बुद्धि या समृद्ध विवेक वाला नहीं है जो वाणी की देवी के यश व महिमा का वर्णन कर सके, साधारण व्यक्ति की तो बात ही नहीं की जा सकती है। देवता, सुप्रसिद्ध योगी, महान मुनिगण और चिरजीवी तपस्वीजन सभी माँ वीणावादिनी की महिमा का गुणगान करते–करते थक गये, किन्तु आज तक कोई भी इनकी उदारता व महानता वर्णन करने में सफल नहीं हुआ। अतीत में भू–लोक वासी श्रेष्ठ मानवों ने इनकी महानता का वर्णन किया है और वर्तमान में भी कर रहे हैं और भविष्य में भी इनकी प्रशस्ति गाते रहेंगे। किन्तु आज तक कोई भी सफलता प्राप्त नहीं कर सका। हम और किसी की या मानव जैसे तुच्छ विवेकी प्राणी की क्या कहें स्वयं सरस्वती देवी भी इनकी महिमा का सही वर्णन करने में सफल नहीं हो सके। स्वयं परम् पिता ब्रह्माजी जो इनके पतिदेव हैं, उन्होंने चार मुखों से और देवादिदेव महादेव नाथ जो इनके पुत्र हैं, ने पाँच मुखों से तथा स्वामी कार्तिकेय जो इनके नाती हैं, ने छः मुखों से इनकी महिमा का वर्णन करने का प्रयास किया किन्तु विश्वेश्वरी माँ सरस्वती का महात्म्य फिर भी नित–नया ही प्रतीत होता है अर्थात् उनकी महिमा तो सदैव वर्णनातीत थी, है और रहेगी ही।

विशेष

1. प्रस्तुत अवतरण में विद्या की देवी की अनिर्वचनीयता को उद्घाटित किया है।
2. सम्पूर्ण छन्द में सम्बन्धातिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग किया गया है।
3. 'कहि–कहि हारे' में पुनरुक्ति अलंकार है।
4. मनहरण कवित्त छन्द की गति व यति अत्यन्त सुन्दर बन पड़ी है।
5. 'भावी, भूत और वर्तमान' में समय की गति है।
6. महाकाव्य की रचना करते समय सर्वप्रथम मंगलाचरण के रूप में कवि श्री गणेश एवं सरस्वती का स्मरण करने के पश्चात अपने आराध्य का स्मरण करता है। आचार्य केशव ने इस दृष्टि से भारतीय महाकाव्यों की परम्परा का अनुकरण किया है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी मंगलाचरण में 'बन्देवाणी विनयक्रम' कहा है।

(2)

राम वन्दना

पूरण पुराण अरु पुरुष पुराण परि–
पूरण बतावें न बतावें और उक्ति को।
दरशन देत जिन्हें दरशन समुझै न,
नेति–नेति कहै बेद छाँडि आन युक्ति को।
जानि यह केशोदास, अनुदिन राम–राम,
रटत रहत न डरत पुनरुक्ति को।
रूप देहि अणिमाहि, गुण देहि गरिमाहि,
भक्ति देहि महिमाहि, नाम देहि मुक्ति को।

शब्दार्थ – पूरन = सम्पूर्ण, परिपूरन = परिपूर्ण, उक्ति = कथन, दरशन = षट्शास्त्र (दर्शनशास्त्र), नेति = न इति (जिसका कोई अन्त नहीं), आन = अन्य, अनुदिन = प्रतिदिन, पुनरुक्ति = पुनरावृत्ति दोष, अणिमा = वह सिद्धि जिसकी सहायता से छोटे से छोटा रूप धारण किया जा सके, मुक्ति = मोक्ष या निर्वाण अर्थात् जीवन–मरण से मुक्ति।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्यावतरण हमारी पाठ्य पुस्तक 'रति रस तरंगिणी' के केशवदास द्वारा विरचित 'रामचन्द्रिका' के अंश से सम्बन्धित है, जिसमें कवि ने प्रभु श्रीराम की अनिर्वचनीय महिमा का सुन्दर वर्णन किया गया है। इस अंश में कवि ने अपनी भक्ति भावना से अपने आराध्य श्रीराम को अनादि–अनन्त बताकर उनकी महत्ता को प्रतिपादित किया है।

व्याख्या – महाकवि केशव प्रभु श्री राम की वन्दना करते हुए कहते हैं कि सम्पूर्ण पुराणों में श्री राम को ही पूर्ण पुरुष माना है। इसके अतिरिक्त कोई भी ऐसा कथन नहीं है जो राम की महानता के विषय में परिपूर्ण हो अर्थात्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

श्री राम पूर्ण ब्रह्म स्वरूप हैं। कवि राम की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जिस राम को सांख्य, योग, वेदान्त आदि दर्शनशास्त्र भी नहीं समझ सकें और स्पष्ट नहीं कर सके, वे राम अपने भक्तों के लिये सहज और सुलभ हैं। वेद भी भेद युक्ति को छोड़कर सदैव नेति–नेति कह कर उनका वर्णन करते हैं अर्थात् जिसका कोई प्रारम्भ और कोई अन्त नहीं है। अतः कवि केशव ने भी इन सभी भ्रम जालों से बचकर निरन्तर राम–राम ही जपते रहते हैं। वे राम–राम की पुनरुक्ति करते हुए किसी प्रकार पिष्ट–प्रेषणता की चिन्ता भी नहीं करते हैं। उन्हें पूर्ण विश्वास है कि राम का रूप चिन्तन उन्हें अणिमा सिद्धि देने वाला, राम का गुणानुवाद गरिमा सिद्धि देने वाला और भक्ति महिमा सिद्धि व प्रभु राम के नाम का स्मरण सभी प्रकार के सांसारिक बन्धनों से मुक्ति प्रदान करने वाला है।

विशेष

1. प्रस्तुत अवतरण में राम की नवधा भक्ति का परिचय प्राप्त होता है। (नवधा भक्ति में श्रवण, स्मरण, गुण–कीर्तन, चरण–सेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य, सख्य और आत्म निवेदन का समावेश होता है)
2. प्रस्तुत अंश में सिद्धियों का जिक्र किया है ये आठ प्रकार की होती हैं, यथा – अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, वशित्व एवं ईशत्व। जिनमें कवि ने श्रीराम की कृपा से चार सिद्धियों की प्राप्ति का सुन्दर वर्णन किया है।
3. प्रथम पंक्ति में अनुप्रास अलंकार तथा तृतीय पंक्ति में यमक अलंकार (दर्शन = साक्षात्कार, दर्शन शास्त्र) का प्रयोग हुआ है।
4. नेति–नेति, राम–राम में पुनरुक्ति है।

(3)
पंचवटी वर्णन

सब जाति फटी दुःख की दुपटी, कपटी न रहै जँह एक घटी।
निघटी रुचि मीच घटी हूँ घटी, जग जीव यतीन की छूटि तटी।।
अघ ओघ की बेरि कटी बिकटी, निकटी प्रकटी गुरज्ञान गटी।
चहुँ औरन नाचति मुक्ति नटी, गुण धूरजटी वन पंचवटी।।

शब्दार्थ – सब जाति = पूरी तरह से, दुपटी = दुपट्टा या चादर, घटी = पल भर, निघटी = निश्चय ही, जती = तपस्वी, गटी = गठरी, बेरी = बेडियाँ, मीच = मृत्यु, तटी = समाधि अवस्था, अघ–ओघ = पाप की राशि, नटी = नर्तकी, धूरजटी = महादेव।

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति रत्न तरंगिणी के केशवदास द्वारा विरचित 'रामचन्द्रिका' के 'पंचवटी वर्णन' खण्ड से उद्धृत है। प्रस्तुत अंश में शेषनाग के अवतार, प्रभु राम के अनुज लक्ष्मण द्वारा पंचवटी की अनुपम प्राकृतिक सुषमा का मनोहारी वर्णन किया है।

व्याख्या – जब राम, लक्ष्मण और जानकी वन गमन के दौरान पंचवटी पर कुछ समय के लिये रुके तो वहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य इतना मन भावन था कि तीनों वनवासियों की सम्पूर्ण थकान व कष्ट क्षण भर में दूर हो गये। लक्ष्मण वहाँ की प्राकृतिक सुषमा की तुलना भगवान शंकर से करते हैं। वे कहते हैं कि जिस प्रकार भगवान शंकर के दर्शन पाकर मनुष्य के सारे दुःख तत्काल दूर हो जाते हैं उसी प्रकार पंचवटी में आते ही यहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर ऐसा लगता है, जैसे सम्पूर्ण दुःखों की चादर फट गई है, अर्थात् सभी प्रकार के कष्ट समाप्त हो गये हैं। यहाँ पर आते ही प्राणी का मन पूरी तरह से शुद्ध, पवित्र और निर्मल हो जाता है, उसके मन में व्याप्त सम्पूर्ण सांसारिक विकारों का शमन हो जाता है। उसके मन का छल–कपट निकल जाता है। ऐसा लगता है, मानों कपटी व्यक्ति तो एक पल के लिये भी यहाँ पर नहीं टिक सकता है। भगवान् शंकर के दर्शन पाने के पश्चात् जैसे मनुष्य मोक्ष की कामना छोड़ देता है तथा वह ब्रह्म का साक्षात्कार करने के लिये समाधिस्थ होने की इच्छा नहीं करता है, उसी प्रकार पंचवटी के पावन परिवेश में आकर मानव जीने की तमन्ना रखने लगता है और मरने से डरने लगता है। यहाँ तक कि तपस्वियों अथवा यतियों की समाधि अवस्था भी छूट जाती है अर्थात् पंचवटी के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर मानव की सभी भौतिक एवं आध्यात्मिक कामनाएँ लुप्त हो जाती है और उसके मन में असीम शांति प्राप्त होने लगती है। लक्ष्मणजी कहते हैं कि जैसे ही व्यक्ति पंचवटी में आता है, वैसे ही मानव के पापों की बेड़ियाँ कट जाती

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

है और शीघ्र ही भारी ज्ञान की गठरी प्रकट हो जाती है। अर्थात् पंचवटी में आने पर व्यक्ति पाप बन्धनों से मुक्त हो जाता है तथा वह ज्ञान चेतना की ओर आकृष्ट होकर महाज्ञानी बन जाता है। इस प्राकृतिक सौन्दर्य में मुक्ति की बलवती इच्छा नटी के समान चारों ओर नाच रही है अर्थात् यहाँ का वातावरण सब प्रकार की सांसारिक चिन्ता एवं तृष्णा से मुक्ति दिलाने वाला है। इस प्रकार इस पंचवटी में स्वयं शंकर भगवान के सभी गुण विद्यमान हैं यह वन निश्चय ही महादेव नाथ के समान है। शिव दर्शनोपरान्त जिस प्रकार पाप शामित हो जाते हैं ठीक उसी प्रकार की अनुभूति इस पंचवटी में आकर भी होने लगती है।

विशेष

1. प्रस्तुत अंश में अनुप्रास और यमक अलंकार का प्रयोग विशेषतः दृष्टव्य है।
2. प्राकृतिक सौन्दर्य के वर्णन में अनुप्रास के प्रयोग से भावगत् सौन्दर्य की हानि हुई है।
3. अवतरण में दुर्मिला सवैया छन्द का प्रयोग हुआ है।

नोट : इस छन्द के प्रत्येक चरण में आठ सगण होते हैं और बारहवें वर्ण पर यति होती है।

(4)
हनुमान लंका गमन

हरि कैसो वाहन कि विधि कैसो हेम हंस,
लीक सी लिखत नभ पाहन के अंक कों।
तेज को निधान राम–मुद्रिका–विमान कैधौं,
लक्ष्मण को बाण छुट्यो रावण निशंक कों।
गिर गजगंड तैं उडान्यों सुबरन अलि,
सीता पद पंकज सदा कलंक रंक कों।
हवाई–सी छूटी केसोदास आसमान में,
कमान कैसो गोला हनुमान चल्यो लंक कों।

शब्दार्थ – कैसो = के समान, विधि = ब्रह्माजी, हेम हंस = स्वर्ण हंस, नभपाहन = आकाश रूपी पाषाण, निधान = भण्डार, गिरिगजगंड = पर्वत रूपी हाथी का कुम्भस्थल, अलि = भंवरा, हवाई = आतिशबाजी।

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति रस तरंगिणी' के केशवदास द्वारा रचित रामचन्द्रिका के अंश 'हनुमान लंका गमन' से अवतरित है जिसमें कवि ने हनुमानजी के लंका गमन के समय का सुन्दर चित्रण किया गया है। सुन्दर पर्वत से लंका की ओर छलांग लगा रहे पवनपुत्र श्री हनुमान की अनेक उपमाओं से उनके सौन्दर्य का वर्णन किया है।

व्याख्या – कवि केशवदास कहते हैं कि जब उन्होंने पर्वत पर से लंका की ओर छलांग भरी तो ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों वे भगवान् श्री हरिविष्णु के वाहन गरुड हों, अथवा स्वयं ब्रह्मा के वाहन स्वर्ण हंस हों, आकाश रूपी कसौटी (पत्थर) पर स्वर्ण रेखा सी खींचते हुए तीव्रता से आगे बढते जा रहे हों। शक्ति, शौर्य और संयम के तेज से युक्त पवनपुत्र श्री हनुमान ऐसे लग रहे थे मानों उन्हें प्रभु श्रीराम के द्वारा दी जाने वाली अंगूठी ही विमान बन गई हो और वे उसी पर सवार होकर उड़ गये हों अथवा ऐसा लग रहा था मानों अहंकारी लक्ष्मणजी ने कोई तीव्र बाण छोड़ा हो, अथवा ऐसा लग रहा था मानों पर्वत रूपी हाथी के कुम्भ स्थल से स्वर्णिम भ्रमर माता जानकी के चरण कमलों की शरण पाने के लिये उड़ कर आकाश में चला जा रहा हो। अथवा ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों किसी ने तेज आतिशबाजी की हो या तोप से निकला हुआ आग का गोला किसी ने लंका की ओर छोड़ा हो।

विशेष

1. प्रस्तुत अवतरण में उत्प्रेक्षा, रूपक और उपमा अलंकार का सामूहिक प्रयोग किया गया है।
2. भाषा रोचक और कर्णप्रिय है।
3. गति, यति की दृष्टि से दण्डक छन्द अति प्रशंसनीय बन पड़ा है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

(5)
सीता दर्शन

धरे एक बेनी मिली मैल सारी।
मृणाली मनो पंक सों काढि डारी।।
सदा राम नामै रटै दीन बानी।
चहुँ ओर हैं राकसी दुःख दानी।।
ग्रसी बुद्धि–सी चित्त चितानि मानौ।
किंधौं जीभ दंतावली में बखानो।।
कींधौं घेरिकै राहु–नारीन लीनी,
कला चन्द्र की चारु पीयूष भीनी।।

शब्दार्थ – धरे = धारण किये हुए, बेनी = चोटी, सारी = साड़ी, मैल = गन्दी, राकसी = राक्षसियाँ, चारु = सुन्दर, पीयूष = अमृत, मानी = सनी हुई, ग्रसी = ग्रस्त।

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति रस तरंगिणी' के केशवदास द्वारा रचित 'रामचन्द्रिका' के हनुमान लंकागमन प्रसंग से अवतरित है जिसमें अशोक वाटिका में सीताजी की स्थिति का वर्णन किया है।

व्याख्या – जब संकट मोचन सियाराम भक्त हनुमान लंका में पहुँचे और अशोक वाटिका में माता जानकी को देखा तो वे अत्यन्त दुःखी हुए। सीताजी उस समय विरह–व्यथा के कारण काफी परेशान थी उन्हें कोई सुधि–बुधि नहीं थी। उनके बिखरे हुए बाल जो एक चोटी के रूप में सिर पर थे और उन्होंने एक मैली सी साड़ी पहन रखी थी। वे उस समय ऐसी लग रही थी मानों किसी ने कमलिनी को कीचड़ या तालाब में से निकाल कर बाहर फैंक दिया हो। अशोक वाटिका में रहकर सीताजी हमेशा अपनी दीन वाणी से प्रभु श्री राम के नाम को रटती रहती थीं वहाँ पर उनको चारों ओर से रावण की अनुचरी राक्षसियों ने घेर रखा था अर्थात् राक्षसियाँ सीता जी की पहरेदारी करने इससे चारों ओर बैठी हुई थीं। वे हमेशा किसी न किसी तरह सीता जी को अनेक कष्ट पहुँचाती रहती थी अर्थात् सीताजी वहाँ काफी परेशान थीं उस समय ऐसा लग रहा था मानों उनका विवेक बिल्कुल निष्क्रिय सा हो गया हो और उनका मन अनेक प्रकार की चिन्ताओं से ग्रसित हो गया हो। जिस प्रकार दाँतों के बीच में घिरी हुई जीभ कुछ भी करने में असमर्थ रहती है, वैसे ही राक्षसियों के बीच में सीताजी की विवेक शक्ति भी काम नहीं कर रही थी। और उनकी सोच भी पराधीन बन गई थी। वे उस समय ऐसी लग रही थी मानों अमृत युक्त चन्द्रमा की सुन्दर कलाओं को राहू की पत्नियों ने घेर लिया हो और उसी तरह उन्हें कष्ट दे रही थी।

विशेष

1. प्रस्तुत अवतरण में कवि ने अशोक वाटिका में सीताजी की स्थिति का सजीव चित्रण प्रस्तुत किया है।
2. कीचड से निकाल दी गई कमलिनी, दाँतों के बीच जीभ, राक्षसी रूपी राहू पत्नियों के बीच सीता रूपी चन्द्रमा में उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त व रूपक अलंकार का प्रयोग किया गया है।
3. अनुप्रास अलंकार का भी प्रयोग किया गया है।
4. पद योजना भावानुकूल है।

(6)
सीता हनुमान संवाद

कर जोरि कह्यौ, हौं पवन–पूत।
जिय जननि जानु, रघुनाथ–दूत।।
रघुनाथ कौन? दशरत्थ नन्द।
दशरत्थ कौन? अज तनय चन्द।।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

'केहि कारण पठए यहि निकेत?'
निज देन लेन संदेश हेत।।
गुन रूप सील सोभा सुभाऊ।
'कछु रघुपति के लच्छन बताउं।।'

शब्दार्थ – पौनपूत = पवन पुत्र, जिय = ह्रदय, निकेत = घर, हेत = के लिये।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति रस तरंगिणी' केशवदास द्वारा विरचित 'रामचन्द्रिका' के 'सीता हनुमान संवाद' से अवतरित है जिसमें माता जानकी हनुमान जी से कुछ पूछ रही है और हनुमान जी उन्हें अपना परिचय दे रहे हैं।

व्याख्या – जब हनुमान जी माता सीता की खोज करते–करते लंका की अशोक वाटिका में पहुँचे और वहाँ पर सीता जी को पाया तो हनुमान जी ने बड़े ही विनम्र भाव से माता सीता को अपना परिचय देते हुए कहा कि 'मैं पवन पुत्र हूँ हे मात! आप मन से और ह्रदय से मुझे प्रभु रघुनाथ जी का ही दूत मानो। तब सीताजी ने पूछा कि कौन रघुनाथ? तब हनुमान जी ने कहा कि रघुनाथ जी दशरथ नन्दन हैं। इस पर सीताजी ने पूछा कि कौन दशरथ? तब हनुमानजी ने कहा कि 'अज के पुत्र दशरथ। सीता जी ने हनुमान जी से फिर से प्रश्न किया कि तुम्हें यहाँ पर क्यों भेजा गया हैं, अर्थात् तुम यहाँ पर क्यों आये हो? तब हनुमान जी ने कहा कि हे माता! मैं आपकी खोज में यहाँ तक आया हूँ और आपको प्रभु रामचन्द्र का संदेश देने व आपका संदेश वहाँ तक लाने के लिये मुझे भेजा गया है। इस पर भी माता जानकी को विश्वास नहीं हुआ तब उन्होंने पुनः पूछा कि यदि तुम प्रभु राम के दूत हो तो उनके स्वभाव, शील, शोभा, गुण, रूप आदि के बारे में बताओ।

विशेष

1. प्रस्तुत अवतरण में सीता व हनुमान का संवाद प्रकट किया गया है, जिसमें प्रश्नोत्तर शैली को काम में लिया गया है।
2. प्रश्नोत्तर शैली द्वारा कथानक को गति प्रदान की जाती है।
3. सीताजी द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों में उनके सरल स्वभाव का परिचय मिलता है।
4. अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय है।

(7)
हनुमान–रावण संवाद

'रे कपि कौन तू? अच्छ को घातक दूत बली रघुनन्दन जू को।'
'को रघुनन्दन रे?' 'त्रिसरा–खरदूषण–दूषण भूषण भू को।'
'सागर कैसे तरयो?' 'जस गोपद' 'काज कहा?' 'सिय चोरहि देखौं।'
'कैसे बंधायौ?' जु सुन्दरि तेरी छुई दृग सोवत पातक लेखौ।'

शब्दार्थ – अक्ष = अक्षय कुमार, घातक = मारने वाला, भूषण = अलंकार, गोपद = गाय के खुर का निशान, पातक = पाप, छुई = निरखी, सोवत = सोती हुई।

प्रसंग प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति रस तरंगिणी' के केशवदास द्वारा विरचित 'रामचन्द्रिका' के 'हनुमान–रावण संवाद' से अवतरित है। स्पष्ट किया है कि जब मेघनाद ने ब्रह्म–पाश में बाँधकर हनुमान को लंकापति रावण के समक्ष प्रस्तुत किया तो रावण और हनुमान के मध्य वार्तालाप होने लगी।

व्याख्या– लंका नरेश रावण ने रामदूत हनुमान जी से पूछा कि हे वानर! तू कौन है? तब हनुमान ने बड़े आत्मविश्वास से उत्तर देते हुए कहा कि मैं वही हूँ जिसने तुम्हारे पुत्र अक्षय कुमार का वध किया है तथा परम पराक्रमी श्री रघुनन्दन जी का संदेश वाहक हूँ। रावण ने पुनः प्रश्न किया कि – रघुनन्दन कौन है? हनुमान ने आश्चर्य व्यक्त किया कि जैसे वह श्री रघुनन्दन को जानता ही नहीं है और कहा कि श्री रघुनन्दन वे ही हैं, जिन्होंने तुम्हारे पराक्रमी त्रिशिरा, खर और दूषण का वध किया था और जो सम्पूर्ण संसार की शोभा बढ़ाने वाले आभूषण हैं। रावण ने पुनः पूछा कि तुमने

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

इतने विशाल सागर को कैसे पार किया? हनुमान ने कहा कि इस विशाल समुद्र को तो मैंने गाय के खुर के निशान की भाँति बहुत ही आसानी से पार कर लिया। रावण ने पुनः हनुमान जी से प्रश्न किया कि तुम यहाँ पर किस प्रयोजन से आये हो? तब हनुमान जी ने कहा कि मैं यहाँ पर माता जानकी के चोर का पता लगाने आया हूँ। रावण ने फिर से प्रश्न किया कि तुम यदि इतने ही बहादुर हो तो बन्दी कैसे बन गये हो। हनुमान बोले कि जब मैं माता सीता का पता लगाता हुआ तुम्हारे महलों में होकर गुजर रहा था तो मैंने तुम्हारी स्त्री को निर्वस्त्र सोती हुई देख लिया था उसी के पाप स्वरूप मुझे बन्दी बनना पड़ा है। हमारे नियमानुसार यदि कोई पर स्त्री को निर्वस्त्र देख ले तो वह पापी होता है और उस पाप का उसे प्रायश्चित्त करना पड़ता है। अतः इस पापकर्म के फलस्वरूप मुझे भी बन्दी बनना पड़ा है।

विशेष

1. प्रस्तुत अवतरण में केशव ने प्रश्नोत्तर–शैली में रावण–हनुमान संवाद का वर्णन किया है।
2. अवतरण में हनुमान द्वारा पाप–फल का कथन कवि कल्पना का चमत्कार है।
3. अवतरण में अनुप्रास, यमक, आक्षेप अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया है।
4. अवतरण में विजया सवैया छन्द की गति यति है।
5. पद योजना अत्यन्त प्रशंसनीय है।

(8)
हनुमान–राम चर्चा

भौरनिं ज्यों भ्रमत रहति बन बीथिकनि,
हंसिनि ज्यों मृदुल मृणालिका चहति है।
हरिनि ज्यों हेरति न केसरि के काननहिं,
केकी सुनि ब्याल जों बिलान हो चहति है।
पीउ–पीउ रटति रहति चित चातकी ज्यों,
चंद चितै चकई ज्यों चुप ह्वै रहति है।
सुनहुँ नृपति राम विरह तिहारे ऐसी,
सुरति न सीता जू की मूरत गहति है।

शब्दार्थ – भौरनिं = भ्रमरी, मृदुल = कोमल, मृणालिका = कमल–नाल, केसरी = सिंह, काननहि = वन में, केका = मोर की आवाज, ब्याल = नागिन, सूरति = स्वाभाविक रूप, मूरत = मूर्ति।

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति रस तरंगिणी' के केशवदास द्वारा रचित 'रामचन्द्रिका' के 'हनुमान–राम चर्चा' प्रसंग से उद्धृत है। जब हनुमान जी ने अशोक वाटिका में माता जानकी के प्रथम दर्शन किये तो उनकी विरह अवस्था को देखकर रामदूत हनुमान व्याकुल हो गये। जब राम ने माता जानकी की स्थिति के समाचार पूछे तो हनुमान जी ने विरह ग्रस्त सीता जी का आकर्षक वर्णन राम के सम्मुख किया।

व्याख्या – हनुमान जी माता जानकी के समाचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि हे प्रभु। जिस प्रकार कोई भ्रमरी वन–मार्ग में दिशाहीन होकर भ्रमण करती रहती है, उसी प्रकार से सीता जी का विकल मन आपकी मधुर–स्मृति रूपी वन में दिशा विहीन भ्रमण करता रहता है। जिस प्रकार हंसनी को सुकोमल कमल नाल की प्रबल चाहत होती है, उसी प्रकार माता जानकी को भी कमल–नाल के समान आपकी बाहों का आश्रय चाहिये। जिस प्रकार कोई मृगी उस वन में नहीं जाना चाहती जिसमें वनराज सिंह निवास करता हो। ठीक उसी प्रकार माता जानकी भी अशोक वाटिका में रहकर केशरी (सिंह) की ओर भूलकर भी देखना पसन्द नहीं करती है। क्योंकि आपके वियोग में वह सब उन्हें काफी पीड़ादायक लगता है। जिस प्रकार मोर की आवाज को सुनकर नागिन बिल में घुस जाती है उसी प्रकार माता जानकी का मन भी मोर की आवाज सुनकर आक्रान्त व उदास होकर अपने आप में सिमट कर रह जाता है। चातकी की तरह से वे भी प्रति पल पिऊ–पिऊ अर्थात् प्रिय राम को रटती रहती है और एक क्षण के लिये भी वे आपके नाम को नहीं भूलती हैं। जिस प्रकार चाँद को देखकर चकवी अतिशय व्यथा से व्यथित होकर चुप हो जाती है, ठीक वैसे ही माता जानकी भी चन्द्रिका को देखकर व्यथित होकर शान्त बैठी रहती है। अतः हे

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

प्रभु श्री राम! आपके विरह में माता जानकी की स्थिति इतनी कारुणिक हो गई है कि वे अपनी सुध–बुध भी खो बैठी हैं और अपनी स्वाभाविक दशा को ग्रहण नहीं कर पा रही हैं। अतः वे आठों प्रहर विरह व्यथा से ग्रसित ही रहती हैं।

विशेष

1. प्रस्तुत अवतरण में कवि ने विरह व्यथा का समीक्षात्मक वर्णन किया है।
2. अवतरण में अनुप्रास, उल्लेख और उपमा अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया गया है।
3. अवतरण में धनाक्षरी छन्द का प्रयोग है।

(9)
राम–रावण युद्ध

इन्द्र श्री रघुनाथ को रथहीन भूतल देखि कै।
बेगि सारथी सौं कहेउ रथ जाहि लै सुविशेष कै।।
तून अच्छय वाण स्वच्छ अभेद लै तनत्रान को।
आइयो रणभूमि में करि अप्रेमय प्रमान को।।
कोटि भाँतिन पौन तें मन तें महा लघुता लरै।
बैठिके ध्वज अग्र श्री हनुमंत अंतक ज्यों हँसै।।
रामचन्द्र प्रदच्छिना करि, दच्छ ह्वै जब ही चढें।
पुष्प वर्षि बजाय दुंदुभि देवता बहुधा बढे।।
राम कौ रथ मध्य देखत क्रोध रावण के बढ्यो।
बीस बाहुन की सराबलि व्योम भूतल सों मढयो ।।
सैल ह्वै सिकता गये सब दृष्टि के बल संहरे।
ऋच्छ बानर भेद तच्छन लच्छधा छतना करे।।

शब्दार्थ – भूतल = भूमि पर, बेगि = तुरन्त, सारथी = रथचालक, सुविशेष = विशेष रूप से, तून = तरकश, अच्छय = नष्ट न होने वाला, अभेद = जिसका भेदन न किया जा सके, तनत्रान = कवच, अप्रमेय = माप रहित, पौन = पवन, अन्तक = यमराज, दच्छ = समर्थ, सरावलि = बाणों की पंक्ति, सैल = पर्वत, सिकता = रेत कण, तच्छन = उसी पल।

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति रस तरंगिणी' के केशव द्वारा विरचित 'रामचन्द्रिका' के राम–रावण युद्ध प्रसंग से अवतरित है जिसमें कवि ने देवराज इन्द्र द्वारा श्रीराम को अपना रथ देने तथा वानर सेना द्वारा राक्षस सेना का विनाश करने का रोचक वर्णन किया है।

व्याख्या – जिस समय श्रीराम ने लंका पहुँच कर रणभूमि में लंका नरेश रावण को युद्ध के लिये ललकारा तो दोनों योद्धा आमने–सामने एक दूसरे की ओर युद्ध के लिये उद्यत हो गये। उस समय रावण अपनी चतुरंगी सेना के साथ एक भव्य रथ पर सवार था और प्रभु राम बिना रथ के ही पृथ्वी पर नंगे पैरों आगे बढ़ रहे थे तब देवराज इन्द्र ने तत्काल अपने सारथी को बुलाया और आदेश दिया कि इसी पल मेरे रथ को विशेष रूप से युद्ध के अनुसार सजा कर ले आओ। उस रथ में ऐसे तरकश रखो, जिसमें अक्षय बाण हों, स्वच्छ हों और जिनमें शरीर की रक्षा करने वाले योग्य कवच हों। तुम एक ऐसा रथ सजाकर लाओ जो अद्वितीय हो जो हवा में निरन्तर गतिशील वजन से भी हल्का हो अर्थात् ऐसा रथ हो जो युद्ध क्षेत्र में अप्रतिहत रहे और जिसमें सम्पूर्ण युद्ध सामग्री उपलब्ध हो। देवराज इन्द्र का आदेश पाकर उनका सारथी ऐसा रथ जैसा कि देवराज ने चाहा था लेकर तत्क्षण पृथ्वी पर आया और प्रभु राम के पास प्रस्तुत हुआ। प्रभु राम प्रसन्न हुए और उसके अग्रभाग अर्थात् ध्वजा में हनुमान विराजमान हो गये और राक्षस सेना को देखकर यमराज की भाँति अट्टहास करने लगे।

Jan Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

कवि केशव कहते हैं कि देवराज इन्द्र के द्वारा भेजे गये विशेष रथ की प्रभु राम ने परिक्रमा की और रावण के समान ही रथाधिरूढ शक्ति से सम्पन्न हो कर ज्यों ही वे रथ पर सवार हुए तो आकाश से सभी देवों ने पुष्प वर्षा की तथा अन्याय पर न्याय की व अधर्म पर धर्म की विजयश्री की प्रसन्नता में झूमकर दुदुंभि वादन किया। जब रावण ने राम को रथ में सवार देखा तो वह क्रोध में तमतमा गया और बीसों भुजाओं से घातक बाणों की वर्षा करने लगा और बाण वृष्टि से उसने धरती से आकाश तक समुचे वातावरण को आच्छन्न कर दिया। इधर श्रीराम अपने रण कौशल से रावण के सारे प्रहारों को प्रभावहीन करने लगे उसके द्वारा छोड़े गये सारे बाण उसी प्रकार से नष्ट और धराशायी हो गये जैसे कोई पर्वत टूटकर रेत के कण बन जाता हो। उधर रीछों और बलशाली वानरों ने शत्रु सेना का जमकर सामना किया और उनके छक्के छुडा दिये। राम और रावण के युद्ध के समय पृथ्वी से आकाश तक चारों ओर बाणों, बर्छियों, अनेक प्रकार के अस्त्र–शस्त्रों की जमकर विनाशक वर्षा होने लगी। राम और राम की सेना ने रावण के हर प्रहार का मुकाबला कर उन्हें प्रभावहीन बना दिया।

विशेष

1. प्रस्तुत अवतरण में कवि ने युद्ध भूमि का वर्णन सामान्य रूप से किया है।
2. अवतरण में मात्र शब्द चमत्कार है रसानुभूति नहीं।
3. भाषा तत्सम व तद्भवात्मक वीर के अनुकूल तथा ओजपूर्ण है।

(10)
रावण–वध

जेहि सर मधु मद मरदि महासुर मर्दन कीन्हेऊ।
मारेउ कर्कश नर्क, शंख, हति शंख जो लीन्हेउ।।
निष्कंटक सुरकंटक कर्यो कैटभ–बपु खण्ड्यो।
खर दूषण त्रिसिरा कबंध तरु खण्ड बिहण्ड्यो।।
कुम्भकरण जेहि संहरयो पल न प्रतिज्ञा ते टरौं।
तेहि बाण प्राण दसकण्ड के कण्ठ दसौं खण्डित करौ।।

शब्दार्थ – मधु = मधु नामक राक्षस, नर्क = नरकासुर, हति = मारना, कैटभ वपु = राक्षस कैटभ का शरीर, कबन्ध = कबन्ध राक्षस।

प्रसंग – प्रस्तुत अवतरण हमारी पाठ्य पुस्तक 'रीति रस तरंगिणी' से लिया गया है जो कवि केशव द्वारा विरचित 'रामचन्द्रिका' के रावण–वध प्रसंग का अंश है।

व्याख्या – प्रभु श्री राम कहते हैं कि जिस बाण से मैंने मधु नामक राक्षस के अहंकार का नाश कर उस शक्तिशाली असुर को मारा था। कठोर, भयानक नरकासुर और शंखासुर दैत्य को मार दिया था और उससे पांचजन्य शंख ग्रहण किया था। जिस बाण से मैंने कैटभ नामक राक्षस के शरीर के टुकडे–टुकडे कर के देवताओं के मार्ग से उसे हटा दिया था। खर–दूषण–त्रिसरा–कबन्ध आदि राक्षसों को वृक्ष खण्डों की तरह खण्ड–खण्ड कर दिया था। जिस बाण से कुम्भकर्ण जैसे राक्षस का संहार करने में क्षणभर भी अपनी प्रतिज्ञा से विमुख नहीं हुआ उसी बाण से हे रावण! मैं तुम्हारे दसों सिरों को एक साथ खण्डित करता हूँ।

विशेष

1. प्रस्तुत अवतरण में राम को श्री हरिविष्णु का अवतार माना है इसी प्रयोजन से मधु, कैटभ, नरकासुर, शंखासुर आदि का वर्णन किया है।
2. इस बात की पुष्टि की है कि पृथ्वी पर जब–जब अधर्म हावी हो जाता है और धर्म को नष्ट कर देता है तब–तब भगवान् अवतार लेते हैं और अपनी अनेक लीलाओं से पाप व अधर्मियों का नाश करते हैं।
3. प्रस्तुत अवतरण को अनुप्रास, यमक, उपमा और काव्यलिंग अलंकारों का प्रयोग किया गया है।
4. भावानुकुल शब्दों का प्रयोग हुआ है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

2.2 महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

2.2.1 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1 केशवदास की गणना किस रूप में की जाती है?
उत्तर – केशवदास की रीतिकालीन काव्य चेतना के प्रवर्तक, श्रेष्ठ आचार्य व श्रेष्ठ कवि के रूप में गणना की जाती है।

प्रश्न 2 केशवदास के आश्रयदाता राजा का क्या नाम था?
उत्तर – केशवदास के आश्रयदाता ओरछा नरेश रामसिंह के अनुज राजा इन्द्रजीतसिंह थे।

प्रश्न 3 'कविप्रिया' के रचनाकार का नाम बताइये।
उत्तर – आचार्य केशवदास 'कविप्रिया' के रचयिता हैं।

प्रश्न 4 "विज्ञान गीता" का सम्बन्ध किस कवि से है?
उत्तर – आचार्य केशव से 'विज्ञान गीता' का सम्बन्ध है।

प्रश्न 5 महाकवि केशवदास की सुप्रसिद्ध रचना का नाम बताइये।
उत्तर – महाकवि केशवदास की 'रामचन्द्रिका' सुप्रसिद्ध रचना है।

प्रश्न 6 कौन–कौन सी रचनाओं ने कवि केशवदास को आचार्यत्व के रूप में सिद्ध किया है?
उत्तर – कविप्रिया, रसिकप्रिया और छन्दमाला ने केशव को आचार्यत्व प्रदान किया है।

प्रश्न 7 कवि केशव को कठिन काव्य का प्रेत क्यों कहा गया है?
उत्तर – कवि केशवदास की रचनाओं में उक्ति वैचित्र्य, चमत्कार पूर्ण अलंकार व प्रकाण्ड पाण्डित्य का प्रदर्शन पर्याप्त रूप से मिलता है जो अपने आप में जटिलता लिये हुए है इसीलिये इन्हें कठिन काव्य का प्रेत कहा गया है।

प्रश्न 8 'रसिकप्रिया' रचना में केशव ने किसका वर्णन किया है?
उत्तर – केशव के द्वारा उनकी रचना 'रसिकप्रिया' में जहाँ रसों का सुन्दर विवेचन किया है, वही नायक–नायिका के भेदों का भी सुन्दर निरूपण किया है।

प्रश्न 9 आचार्य केशव की मुक्तक रचनाएँ कौन–कौन सी हैं?
उत्तर – रतनबावनी, विज्ञान गीता, जहाँगीर जस चन्द्रिका की गणना केशव द्वारा रचित मुक्तक रचनाओं में की गई हैं।

प्रश्न 10 भट्टाचार्य केशव के वंशज मूलतः कहाँ के निवासी माने जाते हैं?
उत्तर – राजस्थान के भरतपुर जिले में कुम्हेर नामक गाँव को आचार्य केशव के वंशज माने जाते हैं।

प्रश्न 11 'पति बरनै चार मुख, पूत बरने पाँच मुख' पति में सरस्वती का पति व पुत्र कौन माने गये हैं?
उत्तर – परमपिता ब्रह्माजी को सरस्वती का पति माना है, और पाँच मुखी देवादिदेव महादेव नाथ को उनका पुत्र माना है।

प्रश्न 12 'पूरन पुराण अरु पुरुष पुरान परिपूरन' – केशव ने पुरान पुरुष किसे कहा है?
उत्तर – केशव ने श्रीराम को पुरुषपुरान अर्थात् 'परमब्रह्म' कहा है।

प्रश्न 13 'नेति नेति कहै वेद' – केशव के अनुसार वेदों में क्या कहा गया है?
उत्तर – केशव के अनुसार वेदों में परमात्मा के अवतार श्रीराम को अनादि–अनन्त–अविनाशी कहा गया है।

प्रश्न 14 'हरिनि ज्यों हेरति न केसरि के काननहि' – प्रस्तुत पंक्ति में 'हरिनि' व 'केसरी' का उपमान किसके लिये किया गया है।
उत्तर – प्रस्तुत पंक्ति में 'हिरण' का उपमान सीता जी के लिये व 'केसरी' का रावण के लिये प्रयोग किया है।

Jan Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

प्रश्न 15 केशव के अलंकारवादी कवि होने का काव्य पर क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर – अलंकारवादी होने के कारण केशव के काव्य में उक्ति वैचित्र्य और चमत्कारवादी प्रवृत्ति दिखाई देती है।

प्रश्न 16 ब्रज भाषा को केशव की क्या देन रही है?
उत्तर – कवि केशव ने ब्रज भाषा में काव्य के शास्त्रीय पक्ष को सम्पूर्णता से ग्रहण किया और उसमें लक्षण उदाहण की परम्परा रूप में स्थापना की।

प्रश्न 17 आचार्य शुक्ल के मतानुसार केशव द्वारा रचित काव्य 'रामचन्द्रिका' में सबसे बड़ी सफलता किस में मिली है?
उत्तर – 'रामचन्द्रिका' की संवाद योजना सर्वाधिक सफल रही है।

प्रश्न 18 केशव को काव्य सिद्धान्त की दृष्टि से किस कोटि का आचार्य माना है?
उत्तर – केशव को काव्य सिद्धान्त की दृष्टि से अलंकारवादी आचार्य माना गया है।

प्रश्न 19 कवि केशव ने जगरानी किसे कहा है?
उत्तर – कवि ने विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती को जगरानी कहा है।

प्रश्न 20 'उत्तम, मध्यम अधम कवि, उत्तम हरि–रस तीन' इस कथन में केशव ने हरि–रस किसे कहा है?
उत्तर – केशव के मतानुसार उज्ज्वल शृंगार–रस ही हरि–रस है।

2.2.2 लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1 केशवदास को कठिन 'काव्य के प्रेत' के रूप में क्यों जाना जाता है?

उत्तर – रीतिकालीन प्रमुख सृजनधर्मी कलाकारों में आचार्य कवि केशव का अपना अलग स्थान रहा है। क्योंकि केशव में रीतिकालीन चमत्कारी प्रवृत्ति रही। इसलिये उक्ति–वैचित्र्य एवं अलंकारों के प्रदर्शन में ये हमेशा उलझे रहे और काव्य रचना करते समय उन पर आचार्यत्व हावी रहा साथ ही वे पाण्डित्य–प्रदर्शन की प्रवृत्ति से भी पूर्णतः आक्रान्त रहे। इनके शास्त्रीय लक्षणों के आग्रह के कारण ऐसी शैली का प्रयोग हुआ जिसमें भाषा की संक्षिप्तता, भारी शब्दों का बोझ और वाग्विदग्धता का पुट अधिक दिखाई दिया। जहाँ एक ओर इन्होंने क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग किया वहीं दूसरी ओर मनोरम दृश्यों के चित्रण में रूखेपन का परिचय दिया है। साथ ही अलंकार व छन्दों का नवीनतम प्रयोग आग्रह रखा है। यही कारण है कि उनके काव्य में क्लिष्ट–कल्पना और नीरसता आ गई है। तत्सम शब्दों का मनमाना प्रयोग करने तथा काव्य रचना में केवल बुद्धित्व का प्रदर्शन कर हृदय–तत्त्व की उपेक्षा करने से केशव को कठिन काव्य के प्रेत के रूप में जाना जाता है।

प्रश्न 2 आप कैसे कह सकते हैं कि आचार्य कवि केशव चमत्कारवादी प्रवृत्ति के कवि थे? स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – रीतिकाल के आचार्य कवि संस्कृत साहित्य से प्रभावित थे, जिसमें चमत्कार और पाण्डित्य–प्रदर्शन की प्रवृत्ति प्रमुख रही है। केशव का परिवेश कुछ ऐसा रहा है जिसमें शृंगार–विलास के चमत्कारों का बाहुल्य था अतः उन्होंने अपने काव्य में उक्ति–वैचित्र्य और क्लिष्ट कल्पनाओं के सहारे पाण्डित्य प्रदर्शन पर अधिक ध्यान दिया था। उनकी रुचि प्रकृति के सुकोमल–आकर्षक स्थलों के वर्णन में भी अलंकारों व छन्दों की योजना बनी रही। वे "भूषण विन न विराजई, कविता वनिता मित्त" के पक्के पक्षधर थे। अतः प्रबन्ध काव्य की रचना के लिये जिस सहृदयता व भावुकता की कल्पना की जाती है या अपेक्षा की जाती है केशव में इनका अभाव रहा है। राम कथा के मार्मिक स्थलों का वर्णन भी उन्होंने चमत्कारी शैली में ही किया है। असम्बद्ध प्रसंगों के विस्तार से वर्णन में मार्मिक प्रसंगों की अवहेलना हुई है और परिगणात्मक शैली में प्राकृतिक स्थलों की केवल गणना करके उन्होंने अपने रूखेपन का परिचय दिया है। अतः हम कह सकते हैं कि केशव एक चमत्कारवादी प्रवृत्ति के कवि थे।

प्रश्न 3 'रामचन्द्रिका' केशव का प्रबन्ध काव्य है इसकी विशेषताओं पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

उत्तर – आचार्य केशवदास की प्रसिद्ध प्रबन्धात्मक काव्य कृति 'रामचन्द्रिका' रामकथा पर आश्रित है। इस महाकाव्य में जिसमें राम की कथा का समग्र रूप से वर्णन किया है और इसमें महाकाव्य के प्रमुख लक्षणों का निर्वाह हुआ है। इसका कथानक सर्गों में विभक्त है। प्रारम्भ में मंगलाचरण है जिसका कथानक प्रख्यात ऐतिहासिक है; इसके

Jan Vishwa Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

मुख्य पात्र भी राम हैं तथा इनके चारों पुरुषार्थों में से श्री राम को धर्म, अर्थ और काम इन तीनों कालों की प्राप्ति होती है। प्रबन्ध काव्य के अनुरूप इस रचना में सागर, पर्वत, ऋतु, सूर्योदय, उपवन आदि सभी विषयों का चित्रण किया गया है। इसमें युद्ध–वर्णन तथा अन्य प्रसंगों को अत्यन्त रोचकता से प्रस्तुत किया गया है। यद्यपि प्राकृतिक चित्रण नीरस है और भावात्मक चित्रण के साथ अन्य प्रसंग भी कम ही हैं। फिर भी कुछ संवादात्मक स्थल अत्यन्त रोचक हैं जिनमें कथानक का स्वयं विकास हुआ है तथा भावानुभूति भी व्यक्त हुई है। अतः रामचन्द्रिका में वे सब लक्षण हैं जो किसी प्रबन्ध काव्य या महाकाव्य में होने आवश्यक हैं। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि केशव द्वारा विरचित 'रामचन्द्रिका' एक सफल प्रबन्ध काव्य है।

2.2.3 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1 'आचार्य कवि केशव हृदयहीन कवि थे' इस कथन की पुष्टि कीजिये।

अथवा

'केशव को हृदयहीन कवि कहना उनके साथ अन्याय करता है।' कथन के पक्ष–विपक्ष में तर्क देकर अपने विचार व्यक्त कीजिये।

अथवा

'केशव का आचार्यत्व निर्भान्त रूप से प्रमाणित है।' इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिये।

उत्तर – रीतिकाल के प्रमुख आचार्य कवि केशव की अपनी एक अलग ही पहचान रही है। इन्होंने जहां एक ओर 'रामचन्द्रिका' जैसी प्रबन्धात्मक रचना कर अपने कवित्व का परिचय दिया है और दूसरी ओर 'कविप्रिया' और 'रसिकप्रिया' जैसे उत्कृष्ट ग्रन्थों की रचना कर साहित्यशास्त्र के आचार्य पद को अलंकृत किया है। संस्कृत में प्रचलित आचार्य परम्परा से केशव अधिक प्रभावित रहे। उनके पिताश्री संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे। उनके घर की शुक सारिकाएं भी संस्कृत ही बोलती थी। संस्कृत का पूर्ण अध्ययन करने से बाण और श्रीहर्ष की समास प्रधान शैली की ओर उनका आकर्षण स्वभावतः बना रहा। प्रारम्भ से ही राज दरबारों की चकाचौंध देखने का इन्हें अवसर मिलता रहा जिसकी वजह से उनकी रुचि अलंकार की ओर अधिक रही। परिणामतः वे रस, रीति, छन्द अलंकार आदि की व्याख्या करने में अग्रसर हो गये और कविकर्म के साथ आचार्य परम्परा का निर्वाह भी करने लगे।

आचार्य पद और उसका महत्त्व

संस्कृत साहित्य में दो प्रकार के सृजन धर्मी साहित्यकार परम्परा के रूप में रहे हैं जिनमें कुछ तो केवल कविता रचना करने में ही प्रवृत्त रहते थे और अन्य शास्त्रीय सिद्धान्तों की विवेचना करते थे। आचार्य से अभिप्राय वह विद्वान जो काव्य की परिभाषा एवं स्वरूप, उसके भेद, काव्य की आत्मा, शोभावर्द्धक तत्त्व, गुण और अलंकार, काव्य में प्रयुक्त शब्द अर्थ एवं प्रयोजन आदि विविध बिन्दुओं की समीक्षा करके सिद्धान्तों का स्थापना करने और लक्षण ग्रन्थों का निर्माण करे। संस्कृत में ऐसे आचार्यों की एक सुदीर्घ परम्परा रही है। वे आचार्य स्वयं कवि भी होते थे और अन्य कवियों के पथ प्रदर्शक भी होते थे। हम उन्हें साहित्य के समीक्षक, आलोचक और पथ प्रदर्शक तीनों ही कह सकते थे। संस्कृत साहित्य के अध्येता होने के कारण केशव का झुकाव इस ओर स्वतः हो गया और वे हिन्दी में आचार्य परम्परा के प्रथम उन्नायक बने।

केशव और उनका आचार्यत्व

केशव द्वारा विरचित तीन ऐसी रचनाएँ हैं जिनमें उनके आचार्यत्व का परिचय प्राप्त होता है 1. कविप्रिया, 2. रसिकप्रिया, 3. छन्द माला। 'रसिकप्रिया' में केशव ने नौ रसों का विवेचन कर के शृंगार रस (हरिरस) का विवेचन किया है और इस रस की विभिन्न प्रवृत्तियों, नायिका की चेष्टाओं, वियोग दशाओं और रस दोषों का वर्णन किया है। नायक–नायिका के भेदों को स्पष्ट करके अपना दृष्टिकोण प्रकट किया है। 'कविप्रिया' में काव्य दोषों की चर्चा, रीतियों और कवि प्रसिद्धियों का वर्णन, अलंकारों का वर्णन किया गया है। यह कलापक्ष का एक श्रेष्ठ ग्रन्थ है। 'छन्दमाला' में शताधिक छन्दों के लक्षण व उदाहरण व्यक्त किये गये हैं। इसी ग्रन्थ में कवियों को शास्त्रीय निर्देश भी दिये गये हैं। इस ग्रन्थ को छन्द शास्त्र का उत्तम लक्षण ग्रन्थ माना गया है। इन रचनाओं में केशव द्वारा काव्यशास्त्रीय लक्षणों की विवेचना करने से उनका आचार्य रूप स्पष्ट रूप से झलकता है।

Jan Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

केशव का रस विवेचन

आचार्य केशव के द्वारा कवियों की तीन श्रेणियाँ निर्धारित की गई हैं जिनका वर्णन 'रसिकप्रिया' ग्रन्थ में मिलता है।

'उत्तम मध्यम अधम कवि, उत्तम हरिरस तीन।
मध्यम मानत मानुषनि, दोषनि अधम प्रवीन।।'

हरि रस से केशव का अभिप्राय उज्ज्वल रस अर्थात् शृंगार रस से है। भरत मुनि द्वारा प्रतिपादित 'रसनिष्पत्ति' के सिद्धान्त के वे समर्थक थे। उन्होंने भावों को व्यापक रूप दिया और विभावों, अनुभावों और सात्त्विक भावों का समावेश भावों में करते हुए उन्हीं को कवियों का जनक बताया गया है –

'आनन लोचन वचन मम, प्रगटत मन की बात।
ताही सों सब कहत हैं भाव कबिन के तात।।'

केशव ने उद्दीपन विभाव को अधिक महत्त्व दिया और सात्त्विक भावों की संख्या आठ बताई हैं। उन्होंने संचारी भाव 35 मानें हैं। इस तरह रस सिद्धान्तों को उन्होंने पूरी तरह से महत्त्व दिया है, नवीनता दी है और अन्य सभी रसों को शृंगार रस के अंग रूप में प्रस्तुत किया है और रसों का राजा भी उन्होंने शृंगार रस को ही माना है और उसका प्रतिपादन हरिरस के रूप में ही किया है।

अलंकारों की पुष्टि

'कविप्रिया' में काव्यालंकारों को सर्वाधिक महत्त्व प्रदान किया है। नायिका के नख–शिख वर्णन में केशव का अलंकारवादी दृष्टिकोण प्रकट हुआ है। कवि ने अपने इसी ग्रन्थ में काव्यगत दोषों, कवि प्रसिद्धियों, रीतियों और चित्र काव्य के भेदों का वर्णन किया है। अलंकारों में भी उन्होंने कुछ अलंकारों को विशिष्ट माना है जिनमें विभाव .. . हेतु, विशेषोक्ति, उत्प्रेक्षा, आक्षेप, श्लेष, निदर्शना, अर्थान्तरन्यास, व्यतिरेक, रुपक, दीपक, उपमा आदि प्रमुख हैं। आचार्य कवि केशव के अनुसार किसी भी रचना में अलंकारों का होना अत्यन्त आवश्यक है। जब तक सुन्दर स्त्री आभूषण नहीं पहन लेगी तब तक वह पूर्ण सौन्दर्य को प्राप्त नहीं कर सकेगी। यही स्थिति काव्य की है। काव्य अपने आप में चाहे कितना ही सुन्दर क्यों न हो उसका सौन्दर्य अलंकारों के बिना अपूर्ण ही माना जायेगा।

'जदपि सुजाति, सुलच्छनी, सुबरन सरस सुवृत्त।
भूषण बिन न विराजई, कविता, वनिता मित्त।।'

इसी प्रकार केशव ने दोषों के अभाव पर अधिक ब्ल दिया है। काव्य दोषों के संदर्भ में उनका कथन है कि जिस प्रकार शराब की एक बूंद से गंगाजल से भरा हुआ पूरा घड़ा ही अपवित्र हो जाता है, उसी प्रकार जरा से दोष मात्र से समुचा काव्य ही अपने मनोहारी तत्त्वों से रहित हो जाता है –

'राजत रंच न दोष जुत, कविता, वनिता, मित्त।
बुन्दक हाला होत ज्यों गंगा घट अपवित्र।।'

छन्द योजना

केशव काव्य शास्त्र के आचार्य थे। उन्हें इस बात का ज्ञान था कि किस विषय में कौनसा छन्द प्रयुक्त होगा। उन्होंने छन्द–माला में अनेक छन्दों का सोदाहरण वर्णन किया है। उन्होंने विषयानुकूल छन्द के चयन में अपनी काव्य कला का पूर्ण परिचय प्रदान किया। बत्तीस अक्षरों वाले अनंग शिखर नामक छन्द तक कुल 76 छन्दों का स्पष्टीकरण किया गया है। केशव ने सभी प्रकार के छन्दों का (वर्णिक व मात्रिक) विवेचन किया है। कुछ विद्वान तो केशव की रचनाओं को 'छन्दों का अजायब' घर मानते हैं। उनकी सुप्रसिद्ध रचना 'रामचन्द्रिका' में छन्द परिवर्तन कुछ इस प्रकार से होता है जिसके कारण भावोद्रेक में बाधा पहुँचती है। कथा–सूत्र में अनावश्यक छन्द परिवर्तन बाधक सिद्ध होता है। रामचन्द्रिका में विविध छन्दों का वर्णन व प्रयोग मिल जाते हैं।

नायक–नायिका भेदों का निरूपण

नायक–नायिका भेद के विवेचन में केशव ने पूर्ववर्ती आचार्यों की परम्परा का अनुसरण किया है। केशव ने नायक के चार भेद बताये हैं अनुकूल, दक्षिण, सठ, धृष्ठ।

Jan Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

'अभिमानी त्यागी तरुन, कोक कलानि प्रवीन।
भव्य छत्री सुन्दर धनी, रुचि–सुचि सदा कुलीन।।'

केशव ने नायिका भेद के लिये जाति, कर्म, अवस्था और प्रकृति ये चार आधार माने हैं और नायिकाओं की विविध चेष्टाओं एवं विलासों का प्रतिपादन किया गया है। नायिकाओं के स्थूल, माँसल चित्रण को देखकर कुछ समीक्षकों का कथन है कि केशव का नायिका–भेद–वर्णन काव्यशास्त्र की दृष्टि से अधिक महत्त्वपूर्ण है। यह केशव की सहृदयता व रसिक प्रकृति का परिचायक है।

केशव का काव्य सिद्धान्त

'कविप्रिया' में केशव का रूप अलंकारवादी आचार्य की दृष्टि से प्रस्तुत हुआ है जिसमें उन्होंने रचना के लिये अनेक निर्देश दिये हैं। साथ ही कवियों के सामने आने वाली बाधाओं की ओर संकेत किया गया है। आचार्य आनन्दवर्धन की तरह कवियों को काव्योपयोगी सुन्दर शब्दों की खोज के लिये कहा गया है –

'चरन धरत चिन्ता करत, नींद न भावत सौर।
सुबरन को सोधत फिरत कवि व्यभिचारी चौर।।'

काव्य सिद्धान्तों की चर्चा में केशव ने रस, रीति, छन्द, अलंकार एवं नायक–नायिका भेद पर अधिक बल दिया है।

केशव की हृदयहीनता

केशव की रचनाओं से यह स्पष्ट होता है कि काव्य रचना करते समय वे उक्ति–वैचित्र्य एवं अलंकारों के चमत्कारिक प्रदर्शन में उलझे रहे। उन पर आचार्यत्व हावी रहा और पाण्डित्य प्रदर्शन की प्रवृत्ति से वे पूर्णतः आक्रान्त रहे। शास्त्रीय लक्षणों के आधिक्य से उन्होंने ऐसी शैली को अपनाया जिसमें अत्यन्त संक्षिप्त भाषा, भारी–भरकम शब्दावली एवं वाग्विदग्धता की अधिकता रही। अर्थ ग्रहण की बाधा का तो उन्होंने जरा सा भी ध्यान नहीं रखा, जिसकी आलोचकों ने कटु आलोचना की है और उनके कवित्व को दूषित बताया है। 'रामचन्द्रिका' में अनेक ऐसे प्रसंग हैं जो अत्यन्त कठिन कल्पना पर आधारित हैं यथा –

सरस्वती वन्दना के प्रसंग में –

'पति बरनै चार मुख, पूत बरनै पाँच मुख।
नाती बरनै षट मुख, तदपि नई नई।।'

प्रस्तुत पंक्तियों में सरस्वती के पति ब्रह्मा और शिव को उनका पुत्र बताया गया है, जबकि ये मान्यताएँ पूर्णतः अप्रचलित हैं और पौराणिक आस्था के विपरीत हैं, क्योंकि ब्रह्मा को शिव का पिता तो किसी भी पुराण में नहीं बताया गया है। यह क्लिष्ट कल्पना केशव के कवित पर दोष है। इसी प्रकार –

'अति चंचल जह चल दलै विधवा बनी न नारि।'

प्रस्तुत पंक्ति में 'चलदलै' शब्द का अर्थ पीपल के पत्ते हैं यह अर्थ अत्यधिक क्लिष्ट है जो पाठकों की समझ से परे है। 'बिधवा' शब्द भी श्लेष है, जिसमें बि + धवा अर्थात् वृक्षों से रहित अर्थ की कल्पना की गई है, इसी प्रकार 'बनी' शब्द का अर्थ वाटिका निकाला गया है जो पाठकों की समझ से काफी दूर है।

केशव के काव्य में तत्सम शब्दों का तथा मन घडन्त शब्दों का काफी अधिक प्रयोग किया गया है। इन प्रयोगों से उनकी विद्वता पाण्डित्य के रूप में झलकती है साथ ही उनके आचार्य रूप का परिचय प्रदान करने वाली है –

'ब्रज को अखर्ण गर्व गंज्यो जेहि पर्वतारि।
जीत्यो है सपूर्व सर्व माँजे ले ले अँगना।।
खण्डित अखण्ड आसु कीन्हों है जलेस–पासु।
चन्दन सी चन्द्रिका सों कीन्हों चन्द्र वन्दना।।'

प्रस्तुत पद में सभी तत्सम शब्द हैं, जिनकी क्लिष्टता के कारण अर्थ संगति भी अत्यन्त क्लिष्ट बन गई है। यही वजह है कि केशव को कठिन काव्य का प्रेत माना गया है। शायद उन्होंने काव्य की रचना आत्मा की प्रेरणा

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

से नहीं की बल्कि पाण्डित्य प्रदर्शन के उद्देश्य से की है। यद्यपि यह उनकी शैलीगत विशेषता है किन्तु आलोचक व समीक्षक इस संदर्भ में कहते हैं कि केशव को पढ़ने के लिये मन व मस्तिष्क के कठिन व्यायाम की आवश्यकता है। कुछ लोगों का यह भी कहना है कि जो लोग बाल बुद्धि हैं वे ही केशव पर कठिनता का आरोप लगाते हैं जबकि यह तो केशव की शैलीगत विशेषता है।

'तिन नगरी तिन नागरी, प्रति पद हंसकहीन।
जलजहार शोभित न जहँ, प्रकट पयोधर मीन।।'

प्रस्तुत दोहे में कवि ने श्लेष और यमक अलंकार की अति सुन्दर छटा समाहित की है। श्लेष अलंकार के द्वारा कवि ने जहाँ नारी सौन्दर्य और सौभाग्य की प्रस्तुति की है वहीं उन्होंने नगरों की समृद्धि का भी वर्णन किया है। इस दोहे में शब्दों का ऐसा गठन किया है कि कहीं भी ऐसा नहीं लगता है कि स्वरूप और गठन के साथ किसी प्रकार का खिलवाड़ किया है। यह तो केशव की विशेषता है कि वे सम्पूर्ण अर्थों को अपने वाच्यार्थ से ही प्रकट कर देते हैं। इनका वाच्यार्थ इतना अधिक चमत्कारी है कि स्थायी रूप से पाठक के हृदय में अपनी छाप छोड़ने में सफल रहता है। इनकी रचनाओं में न केवल कवि रूप ही झलकता है अपितु आचार्य रूप भी अपना परिचय प्रदान करने में पीछे नहीं है। उनके काव्य का रसास्वादन करने के लिये पूर्ण विवेक की आवश्यकता होती है। इस संदर्भ में डॉ. राम गोपाल सिंह चौहान का वक्तव्य दृष्टव्य है –

"केशव युग पीड़ित थे। यदि दोष है तो यही कि उन्होंने युग के साथ विद्रोह नहीं किया, जबकि उनमें उसके स्फुलिंग विद्यमान थे। जहाँ उन्होंने एक परम्परा का सूत्रपात किया था, वहाँ कुछ परम्पराओं से हटकर भी सोचा था। उनकी प्रमुख रचना 'रामचन्द्रिका' का शिल्प, उपमानों का प्रयोग, सौन्दर्य के विभिन्न रूपों का दर्शन और युग के ही अनुरूप चित्रों का नया रूप उनकी विद्रोही आत्मा के रूप को स्पष्ट करते हैं ..... किन्तु वे सारे विद्रोह ऐश्वर्य की चकाचौंध में खो गये।"

इस प्रकार केशव को 'कठिन काव्य का प्रेत' कहकर उनके वैदग्ध्य को दूषित करना सर्वथा अनुचित है। ऐसा अवश्य कहा जा सकता है कि केशव ने विदग्ध्य पाठकों के लिये ही काव्य रचना की। उन्होंने काव्य के भाव पक्ष को उतना ही महत्त्व प्रदान किया जितना कि काव्य के शिल्प पक्ष को। उनका काव्य–शिल्प उनकी अभिव्यक्ति विद्या का अभिन्न माध्यम रहा है। उनके शब्द उच्च स्तरीय संस्कारों से युक्त रहे हैं। उन्होंने रसराज शृंगार को उसके अलौकिक रूप में ग्रहण न कर के उसे लौकिक शृंगार के रूप में ग्रहण किया है। 'रसिकप्रिया' में शृंगार रस के आलम्बन रूप में नायिकाओं का विवेचन प्रस्तुत करते हुए उन्होंने 'सामान्य' नायिका का इस प्रकार परित्याग किया है कि उसकी रसोज्ज्वलता में किसी भी प्रकार की उपयोगिता नहीं रह जाती है। अतः स्पष्ट होता है कि केशव में परम्परानुसार रसानुभूति रही है काव्य काठिन्य के साथ कलात्मक चमत्कार भी है। पूर्वाग्रह से ग्रस्त आलोचकों ने केशव को 'कठिन काव्य का प्रेत या हृदयहीन कवि कहा है, जो एकांगी कथन है।

निष्कर्ष रूप गें हग यह कह राकते हैं कि केशव नहले आचार्य हैं, तत्पश्चात् कवि। उन्होंने लक्षण ग्रन्थों के आधार पर काव्य रचना की, इस कारण से उनमें काव्यगत क्लिष्टता एवं पाण्डित्य आ गया। वस्तुतः केशव हिन्दी साहित्य परम्परा के प्रथम काव्याचार्य थे। उन्होंने 'रसिकप्रिया', 'कविप्रिया', 'छन्दमाला' और 'नखशिख' इन चारों रचनाओं में काव्यशास्त्र के जिन लक्षणों का विवेचन किया उनका विवेचन 'रामचन्द्रिका' में जगह–जगह पर मिल जाता है। उसमें छन्द, अलंकारों के वैविध्य एवं शब्दगत चमत्कार को देखकर केशव का आचार्यत्व रूप अधिक प्रमाणित होता है। निःसंदेह, अपने काल की आवश्यकता एवं भौतिक विचित्रता का प्रभाव होने से अथवा सामाजिक प्रवृत्ति होने से केशव पर कवित्व की अपेक्षा आचार्यत्व अधिक प्रभावी रहा है। इस तथ्य की ओर ध्यान न देकर ऐसे विद्वान आचार्य कवि को 'कठिन काव्य का प्रेत' या हृदयहीन कवि बताना उनको सर्वथा निरादर करना है।

प्रश्न 2 प्रबन्ध काव्य की दृष्टि से सुप्रसिद्ध रचना 'रामचन्द्रिका' की प्रमुखता को स्पष्ट करते हुए बताइये कि क्या वह एक सफल महाकाव्य की श्रेणी में आता है?

अथवा

'रामचन्द्रिका' की प्रबन्धात्मकता पर विचार व्यक्त कीजिये तथा उसके गुण–दोषों की समीक्षा कीजिये।

उत्तर – सनाढ्य ब्राह्मण कृष्णदत्त के पौत्र और काशीनाथ के पुत्र केशव का हिन्दी साहित्य जगत में आचार्य एवं कवि के रूप में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। 'रामचन्द्रिका' ऐसी रचना है जो रामकथाश्रित है, जिसमें रामकथा का

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

सुसम्बद्ध वर्णन किया गया है। इसी वजह से इसे प्रबन्ध काव्य माना है। वस्तुतः इस रचना में प्रबन्धात्मकता के साथ–साथ महाकाव्य के सभी गुण विद्यमान हैं। संस्कृत काव्य–शास्त्र में महाकाव्य को पर्याय रूप में प्रबन्ध–काव्य ही माना जाता है। 'रामचन्द्रिका' की प्रबन्धात्मकता को हम निम्नलिखित तथ्यों से स्पष्ट कर सकते हैं –

रामचन्द्रिका प्रबन्ध काव्य के रूप में

आचार्य विश्वनाथ को साहित्य का दर्पणकार माना गया है, उनके मतानुसार महाकाव्य वही है जो सर्वबन्धात्मक हो। इसका शुभारम्भ वस्तुनिर्देश रूप मंगलाचरण से किया जाता है। इसमें किसी न किसी ऐतिहासिक कथा अथवा घटना का चित्रात्मक वर्णन किया जाता है और इसका प्रयोजन चारों पुरुषार्थों का प्रतिपादन करना होता है। महाकाव्य में धीरोदात्त नायक होता है अथवा प्रख्यातवंशी राजाओं के चरित्र का उद्घाटन किया जाता है, जिसमें नगर, ऋतु, वन, पर्वत श्रृंखलाएँ, सूर्य, चन्द्र, बाग–बगीचे, जल–क्रीड़ा, मधुपान आदि का वर्णन भी किया जाता है। अच्छा महाकाव्य वही माना जाता है जिसमें पर्याप्त छन्द विधान हो और विभिन्न प्रसंगों के द्वारा कथा नायक का अभ्युदय प्रदर्शित किया जाता हो साथ ही महाकाव्य में एकांगी रस की दरकार होती है तथा अन्य रसों का प्रयोग यथा स्थान कर देना भी ठीक ही होता है। इस प्रकार प्राचीन आचार्यों ने प्रबन्ध काव्य अथवा महाकाव्य के लक्षणों में विविध तत्त्वों का समावेश करके उसके लिये अनेक दिशानिर्देश प्रस्तुत किये हैं।

रामचन्द्रिका और काव्य गुण

आचार्य कवि केशव द्वारा विरचित प्रबन्ध काव्य 'रामचन्द्रिका' में काव्य के सभी गुण समाहित किये गये हैं जिसमें किसी प्रकार की कमी दिखाई नहीं देती है। इस ग्रन्थ का कथानक सर्गों में विभक्त है तथा इसके श्रीगणेश के साथ आशीर्वाद की कामना को लेकर मंगलाचरण है, जिसमें विघ्नविनाशक विनायक, विद्या की अधिष्ठात्री माँ सरस्वती तथा परमेश्वर स्वरूप श्रीराम की वन्दना की गई है। कथावस्तु की ओर निर्देशित करते हुए इसके रचयिता ने कहा है कि मैं भगवान् राम के कथा वैभव का अनेक छन्दों में वर्णन कर रहा हूँ –

जगती जाकी ज्योति जग, एक रूप स्वच्छन्द।
रामचन्द्र की चन्द्रिका, बरनत हौं बहु छन्द।।

इस महाकाव्य की कथावस्तु सुप्रसिद्ध एवं ऐतिहासिक है इसके नायक श्रीराम न केवल धीरोदात्त ही हैं अपितु साक्षात् जगदीश्वर श्रीहरिविष्णु के अवतार हैं। चारों पुरुषार्थों में से धर्म, अर्थ और काम इन तीनों की प्राप्ति होती है और चौथा पुरुषार्थ के संदर्भ में क्या कहें उसके तो वे स्वयं दाता हैं –

'शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्,
विश्वाधारं गगन सदृश्यं मेघ वर्णं शुभांगम्।
लक्ष्मीकान्तं कमल नयनं योगिविर्धान्यगम्यम्,
वन्दे विष्णु भव भय हरं सर्व लोकैक नाथम्।।'

केशव की 'रामचन्द्रिका' सूर्यवंश की नगरी अयोध्या की अनुपम छटा को समाहित किये हुए है और दशशीश रावण की लंका नगरी के वैभव का भी अत्यन्त सौन्दर्य लिये हुए है। इसके अतिरिक्त वन–बाग–बगीचे, पर्वत, सागर, नदियाँ, पशु–पक्षी, सूर्यदेव, चन्द्रदेव, चन्द्रिका, ऋतुएँ आदि को महाकाव्योचित विषयों के रूप में चित्रित किया गया है। विशेष बात यह है कि इस महाकाव्य में श्रृंगार के दोनों रूपों (संयोग और वियोग) का संयोग समाहित है जिसकी भूमिका स्वयं काव्य नायक राम और जानकी निभाते हैं। लव और कुश के माध्यम से कुमारोत्पत्ति का भी वर्णन किया गया है। नायक राम और खलनायक रावण दोनों की एक मंत्री परिषद है जिसमें समय–समय पर मंत्रियों से यथोचित मंत्रणा भी की जाती है। नायक और खलनायक के बीच सिद्धान्तों का मतभेद चलता है क्योंकि नायक धर्म, नीति, न्याय, सत्य व मानवता के अधिष्ठाता हैं जबकि खलनायक अधर्म, अनीति, अन्याय, असत्य व दानवता का पोषक है। दोनों के बीच घमासान युद्ध होता है जिसका अत्यन्त रोचक चित्रात्मक वर्णन इस ग्रन्थ में किया गया है और अन्त में कथानक के अनुरूप सात्विक गुणों से श्रीराम की विजय का चित्रोपम वर्णन किया गया है। इस महाकाव्य का प्रमुख रस श्रृंगार रस रहा है किन्तु विभिन्न प्रसंगों में अन्य रसों का भी सफल प्रयोग किया गया है। इसमें अनेक छन्दों का गरिमापूर्वक किन्तु विचित्र ढंग से प्रयोग किया गया है। इस

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

महाकाव्य में जितने भी अध्याय हैं वे आकार की दृष्टि से सामान्य हैं अतः हम कह सकते हैं कि इस महाकाव्यग्रन्थ 'रामचन्द्रिका' में सभी काव्यगत गुणों का यथायोग्य समावेश किया गया है।

कथा संगठन – 'रामचन्द्रिका' की प्रबन्धात्मकता पर अनेक विद्वानों व आधुनिक आलोचकों ने कई आक्षेप लगाये हैं और इसे मात्र लक्ष्य ग्रन्थ ही माना है किन्तु कथा संगठन की दृष्टि से देखा जाये तो इस रचना में पूरी तरह से सफल निर्वाह कवि के द्वारा किया गया है। कथानक में भी घटना क्रमानुसार अनेकानेक कांट–छांट भी केशव द्वारा की गई है कुछ घटनाओं को तो छोड़ दिया है और कुछ का सांकेतिक वर्णन किया गया है। इसमें कथानक को कुछ ऐसे ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है कि कहीं पर शिथिलता न आये और निरंतरता भी बनी रहे।

प्रकृति चित्रण – यह अवश्य कहना पड़ेगा कि आचार्य कवि केशव ने अपनी 'रामचन्द्रिका' में प्रकृति चित्रण में कंजूसी बरती है। इस संदर्भ में एक आलोचक अपने मुक्त विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि 'रामचन्द्रिका' में न रंगों की चटक है, न पत्तों की मर्मर, न फूलों की हास है; न पक्षियों की गूंजन; न झरनों का कल–कल निनाद है; और न लहरों का नर्तन ही। बस केवल उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, अनुप्रास आदि अलंकारों की ऊपरी टीम–टाम है।' प्रबन्ध काव्य की दृष्टि से रामचन्द्रिका की यह सबसे बड़ी कमी रही है।

भावात्मक चित्रण – केशव की रामचन्द्रिका में ऐसे प्रसंगों का अभाव रहा है जिनमें भावात्मकता हो, फिर भी दशरथ द्वारा राम–लक्ष्मण को विश्वामित्र के साथ भेजना, राम व सीता विरहावस्था, लक्ष्मण शक्ति, भरत–कैकेयी संवाद, हनुमान–रावण संवाद आदि कुछ भावात्मक, मार्मिकता का अहसास दिलाने वाले दृश्य हैं। इन प्रसंगों में अलंकारों का चमत्कार भी है –

मग को श्रम श्रीपति दूर करैं
सिय को शुभ बल्कल अंचल सौं।
श्रम तेउ हरैं तिय को कहि केशव,
चंचल चारु दृगंचल सौं।।

इसी प्रकार अशोक वाटिका में जानकी विरह व्यथित रहती है –

धरै एक वेणी मिली मैली सारी।
मृणाली मनो पंक ते काढि डारी।।

राम को हनुमान जी के द्वारा जानकी का संदेश व उनकी विरह जन्य वेदनापूर्ण स्थिति का वर्णन भी मार्मिकता लिये हुए है –

पिउ–पिउ रटति चित चातकी ज्यों,
चंद वितै चकई ज्यों वुप रहती है।
सुनहु नृप राम विरह तिहारे ऐसी,
सूरति न सीता जू की मूरति गहति है।।

इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है कि 'रामचन्द्रिका' में आकर्षक और रोचक प्रसंग भी है जिसमें अंगद–रावण संवाद और अश्वमेघ प्रकरण में लव–कुश द्वारा सुग्रीव, अंगदादि पर सुन्दर और रोचक कटाक्ष किये गये हैं। अतः रामचन्द्रिका में प्रबन्ध काव्य व महाकाव्य का पूरा–पूरा निर्वाह करने का प्रयास किया गया है और सफलता भी केशव को मिली है।

रामचन्द्रिका और प्रबन्धात्मकता के दोष

यद्यपि 'रामचन्द्रिका' में महाकाव्य के लगभग सभी गुण विद्यमान हैं, तथापि कुछ ऐसे दोष हैं जिनकी वजह से कई समालोचक न्यूनता बताने में जरा से भी नहीं हिचकिचाते हैं यथा –

1. भावपूर्ण मार्मिक प्रसंगों का अभाव – केशव को हृदयहीन कहने वाले आलोचक इस बात को दावे के साथ कहते हैं कि कवि के शरीर में कवित्व तो कूट–कूट कर समाहित था किन्तु संवेदनशीलता या मर्म का अभाव रहा है इसका साक्षात् उदाहरण केशव की रचनाओं में मार्मिकता नहीं है। रामचन्द्रिका में भी मार्मिक प्रसंगों की

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अवहेलना हुई है। जब कैकेयी ने राजा दशरथ से वरदान माँगे थे तो उस प्रसंग में जितनी मार्मिकता होनी चाहिये थी वह नहीं हुई। केशव ने राजा दशरथ व अन्य रानियों की व्याकुलता का थोड़ा सा भी खयाल नहीं रखा –

'कीधौं कोउ न उरा हौ, ठगौरी लीन्हे कीधौं तुम।
हरि हर श्री हौं सिवा, चाहत फिरत हों।।'

जब दशरथ का अंतिम संस्कार करने के लिये भरत व शत्रुघ्न जाते हैं तो उनकी और अयोध्यावासियों की व्याकुलता का भी केशव ने जरा सा ध्यान नहीं रखा। बस दो–तीन पंक्तियों में भरत द्वारा वल्कल धारण कर के गंगा पार कर चित्रकूट में जाने का संकेत दिया है –

पहिरे वल्कला जु जटा धरि कै। जिन पायन पंथ चले हरि कै।
तरि गंग गये गृह संग लिये। चित्रकूट विलोकत छाड़ि दिये।।

2. प्रसंगों की असम्बद्धता – केशव की 'रामचन्द्रिका' में कुछ प्रसंग तो ऐसे हैं जो जितने अधिक मार्मिक होने चाहिये थे उतने ही नीरस बने हुए हैं सीता हरण के पश्चात् प्रभु राम का सीता की खोज में किया जाने वाला प्रयास और उनका विरह विलाप तो शायद केशव भूल ही गये हैं –

'हे खग, हे मृग, हे मधुकर श्रेणी, तुम देखी सीता मृग नैनी।'

आदि विलाप से भी केशव द्रवीभूत नहीं हो सके और वहाँ पर भी वे अलंकारों की प्रवृत्ति में ग्रस्त रहे। कुछ प्रसंग कथावस्तु से असम्बद्ध हैं और वे कथावस्तु में उत्कर्ष बढ़ाने में अक्षम हैं। जैसे राम द्वारा विधवा धर्म का वर्णन, दान विधान सनाढ्योत्पत्ति, राजश्री निन्दा, रामविरक्ति और सत्यकेतु आख्यान आदि। चित्रकूट पहुँचने पर भरत ने जो वेदना–व्यथा प्रकट की उसकी ओर भी केशव ने किसी प्रकार की मार्मिक प्रतिक्रिया नहीं जताई। अतः केशव की योजना असम्बद्ध मानी गई है।

वर्णन विस्तार के प्रति रूझान – केशव द्वारा विरचित प्रबन्ध काव्य 'रामचन्द्रिका' में अनेक ऐसे प्रसंग हैं जिनके वर्णन को कुछ विस्तारपूर्वक व्यक्त किया गया है। विश्वामित्र के अयोध्या आगमन के अवसर पर सत्ताईस छन्दों में सरयू नदी का वर्णन, राजा दशरथ तथा अयोध्या नगरी व वहाँ के उद्यानों का वर्णन है। अन्य दर्शनों में अरुणोदय, राम विवाह व उसके पश्चात् पुनः अयोध्या का वर्णन, पंचवटी वर्णन, गोदावरी वर्णन, त्रिवेणी एवं ऋषि भारद्वाज के आश्रम का वर्णन आदि। 'रामचन्द्रिका' के उत्तरार्द्ध में तो केशव की यह प्रवृत्ति और भी अधिक दिखाई देती है। राम राज्य, राज–भवन, शयनागार, जलशाला, गन्धशाला, मंत्रशाला आदि का वर्णन इस प्रवृत्ति के ज्वलन्त उदाहरण है। इस दृष्टि से आचार्यत्व कवि केशव ने 'रामचन्द्रिका' को काफी उन्नत बना दिया है।

कथानक की असम्बद्धताओं के कुछ विशेष ही कारण रहे हैं, जिनमें रामायण की लोकप्रियता एवं विशालता, रागकथा का वैभव–वर्णन की प्रधानता, कवि पर पड़ा दरबारी प्रभाव। कारण चाहे जो भी हो, इतना कहना पड़ेगा कि कथा की सुसंघटना एवं जीवन्तता के अभाव में कवि अपेक्षित गरिमा, गाम्भीर्य की योजना करने में असफल है, जिसकी वजह से 'रामचन्द्रिका' जैसे महाकाव्य में शिथिलता व न्यूनता समाहित हो गई है अतः यह काव्य शिथिल महाकाव्य माना जा सकता है।

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि आचार्य कवि केशव एक प्रबन्धकार की प्रतिभा तथा कवित्व की शक्ति से युक्त थे किन्तु परिस्थितिवश उनका समुचित उपयोग करने में असफल रहे और अपने पाण्डित्य प्रदर्शन के मोह में क्लिष्टता एवं स्व–कठोरता से घिरे रहे जिसकी वजह से उनकी रचना में स्थूल दोष उत्पन्न हो गया। इस दृष्टि से रामचन्द्रिका की प्रबन्धात्मकता एवं महाकाव्यत्व कीचड़ में लिप्त कमल सदृश्य सुन्दर परिलक्षित होते हुए भी कुछ न्यून दिखाई देता है वैसे औसतन यह सफल रहा है।

प्रश्न 3 केशव की संवाद–योजना पर एक सारगर्भित निबन्ध लिखिये।

अथवा

'केशव की संवाद–योजना बेजोड़ एवं सर्वोत्कृष्ट मानी जाती है।' इस कथन की सोदाहरण पुष्टि कीजिये।

उत्तर – रीतिकालीन कवियों में आचार्य केशव का नाम पूर्ण सम्मान के साथ लिया जाता है। इन्होंने अपने काव्य में जो संवाद प्रस्तुत किये हैं वे अपने आप में अत्यन्त प्रशंसनीय एवं रोचक माने जाते हैं। इन्होंने नाटकीय शैली में

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

संवाद कर अपनी अनोखी प्रतिभा का पाठकों से साक्षात्कार कराया है। केशव की संवाद–योजना को हम 'रामचन्द्रिका' का मूलाधार कह सकते हैं जो रीतिकालीन काव्यों में सर्वश्रेष्ठ है। किसी भी सफल महाकाव्य में संवादों का उत्कृष्ट स्तर पर प्रयुक्त होना आवश्यक होता है इस दृष्टि से यदि हम 'रामचन्द्रिका' की संवाद योजना का अध्ययन करें तो उनकी श्रेष्ठता सिद्ध हो जाती है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने केशव की संवाद–योजना के संदर्भ में लिखा है कि 'रामचन्द्रिका' में केशव को सबसे अधिक सफलता संवादों में ही मिली है। प्रारम्भ से लेकर अन्त तक संवादों की सजीवता विद्यमान है जिसके कारण एक ओर तो रोचकता अपने चरम स्तर पर है और दूसरी ओर अध्येता के मन को अनुरंजित करने में पूर्णतः सफल है। इस महाकाव्य के संवाद पात्रों के व्यक्तित्व के उद्‌घाटन के साथ–साथ कथानक व उसके विकास को भी पर्याप्त गति प्रदान करने में सफल है। संवादों के माध्यम से केशव ने पात्रों की अन्तःभावना की अभिव्यक्ति की है जिसकी वजह से उनका चरित्र–चित्रण करते समय पाठक को किसी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ता है। केशव ने जिस ढंग से संवाद योजना को काम में लिया है वह ढंग लोकप्रियता का भी एक अहम कारण बना है।

रामचन्द्रिका की संवाद योजना – केशव का संवाद भाव व कला दोनों ही दृष्टि से अत्यन्त प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत हुई है। इस सुन्दर योजना से पाठक बिना किसी परेशानी के प्रभावित हो जाता है। केशव ने अपनी इस योजना को जीवन्त बनाये रखने के लिए गुणों की विविधता को विशेष रूप से समाहित किया है। यदि किसी काव्य कृति के अन्तर्गत सन्निहित संवादों को केवल एक ही प्रकार से भाव–भूमि पर स्थापित किया जाये तो उसमें विशेष प्रभावोत्पादकता उत्पन्न नहीं होती है, अतः उनमें विभिन्नता का समायोजन नितान्त आवश्यक है। आचार्य केशव इस तथ्य से भली–भाँति परिचित थे, कदाचित् इसी लक्ष्य को लेकर उन्होंने अपने महाकाव्य 'रामचन्द्रिका' के संवादों में भाव एवं कला दोनों दृष्टियों से वैविध्य का समावेश किया है।

रामचन्द्रिका और संवाद योजना

प्रो. सुरेशचन्द्र गुप्त ने केशव द्वारा विरचित 'रामचन्द्रिका' में प्रमुख रूप से छः प्रकार के संवाद बताये हैं किन्तु विस्तारपूर्वक इनका अवलोकन करने पर इसमें दस मुख्य संवाद हैं जो अपना प्रमुख स्थान रखते हैं। संवादों का प्रमुख प्रसंग इस प्रकार है –

1. दशरथ–विश्वामित्र संवाद (सर्ग–2)
2. सुमति–विमति संवाद (सर्ग–3)
3. रावण–बाणासुर संवाद (सर्ग–4)
4. विश्वामित्र–जनक संवाद (सर्ग–5)
5. परशुराम–वामदेव संवाद (सर्ग–6)
6. परशुराम–राम–लक्ष्मण संवाद (सर्ग–7)
7. कैकेयी–भरत संवाद (सर्ग–10)
8. शूर्पनखा–राम संवाद (सर्ग–11)
9. सीता–रावण संवाद (सर्ग–13)
10. हनुमान–रावण संवाद (सर्ग–14)
11. रावण–अंगद संवाद (सर्ग–16)
12. लव–कुश, विभीषण–सुग्रीव संवाद (सर्ग–17)

इन संवादों को हमने सुविधा के लिये निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया है –

1. गत्यात्मक संवाद
2. चरित्रोद्‌घाटक संवाद
3. पूर्व घटना–सूचक संवाद
4. प्रश्नोत्तरमूलक संवाद
5. व्यंग्यात्मक संवाद

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

6. भावानुकूल संवाद
7. कूटनीतिक संवाद
8. परिचयात्मक संवाद
9. नाटकीय संवाद
10. आध्यात्मिक संवाद।

1. **गत्यात्मक संवाद** – कथा–विकास को गति प्रदान करने के लक्ष्य से इस प्रकार के संवाद काम में लिये जाते हैं। इन्हीं संवादों के माध्यम से घटनाओं को परस्पर सम्बद्ध किया जाता है। इनके अन्दर प्रारम्भ से अन्त तक गति विद्यमान रहती है। जिसमें स्वाभाविकता समाहित रहती है। आचार्य कवि केशव के प्रबन्ध काव्य 'रामचन्द्रिका' में रावण–वाणासुर संवाद तथा मारीच–रावण संवाद इस गत्यात्मक संवाद के ज्वलन्त उदाहरण हैं। जब रावण अपने प्रतिद्वन्द्वी राम के विरुद्ध मारीच से सहायता हेतु जाता है तो मारीच उसे सचेत करता है किन्तु रावण कतई नहीं मानता है –

रावण– तु अब होहि सहायक मेरो। हौं बहुते गुण मानि हौ तेरो।।
जो हरि सीतहिं ल्यावन पैहैं। वे भ्रम सोकन ही मरि जैहै।।
मारीच– रणहिं मानुष के जनि जानौ। पूरण चौदह लोक बखानो।।
रावण– तू अब मोहि सिखावत है सठ। मैं बस लोक करे अपनी हठ।।

2. **चरित्रोद्घाटक संवाद** – पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को उद्घाटित करने के प्रयोजन से इस प्रकार के संवादों का प्रयोग किया जाता है। केशव के महाकाव्य में इस श्रेणी के संवाद काफी हैं जिनमें जनक–विश्वामित्र संवाद, वामदेव–परशुराम संवाद, राम–परशुराम संवाद, हनुमान–रावण संवाद, सीता–रावण संवाद आदि इसी प्रकार के संवाद रहे हैं। जिनके माध्यम से पात्रों के चरित्र पर काफी प्रकाश पड़ा है यथा – जनक व विश्वामित्र संवाद –

विश्वामित्र– सुन्दर श्यामल राम सुजानो, गोरे सुलक्ष्मण राम बखानो।
आशिष देहु इन्हें सब कोऊ, सूरज के कुल मण्डन दोऊ।।
नृपमणि दशरथ नृपति के, प्रकटे चारि कुमार।
राम भरत लक्ष्मण ललित, अरु शत्रुघ्न उदार।।

परशुराम–वामदेव संवाद

परशुराम– यह कौन को दल देखिये?
वामदेव– यह राम को प्रभु लेखिये।
परशुराम कहि कौन राम न जानिहो?
वामदेव– शर ताडका जिन मारियो।

इसी प्रकार हनुमान–रावण संवाद व अंगद–रावण संवाद भी राम व रावण के चरित्र पर आलोक डालते हैं –

रे कपि कौन तू? 'अच्छ को घातक, दूत बलि रघुनन्दनजू को।'
'को रघुनन्दन रे?– त्रिसरा–खरदूषण–दूषण भूषन भू को।।'
'सागर कैसे तरयो?' जैसे गोपद काज कहा ?' सिय चोरहि देखौ।'
'कैसे बंधायो? जो सुन्दरी तेरी हुई दृग सोवत पातक लेखौ।।'

3. **पूर्वघटना सूचक संवाद** – केशव कृत महाकाव्य 'रामचन्द्रिका' में अनेक संवाद ऐसे हैं जिनसे पूर्व घटित घटनाओं का संकेत मिलता है तथा कथानक में वर्णनात्मकता का समावेश हुआ है।

भरत–कैकेयी संवाद –

मातु कहाँ नृप? तात गये सुर लोकहि, क्यों सुत शोक लये?
सुत कौन सु? राम कहाँ है अबै? बन लक्ष्मण सीय समेत गये।।
बन काज कहाँ कहि? केवल मो सुख, तोको कहा सुख याते भये?

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

अंगद–रावण संवाद

राम को काम कहा? रिपु जीतहिं, कौन कबै रिपु जीत्यो कहाँ?
बाली बलि, छल सो, भृगुनन्दनगर्व हर्‌यो, द्विज दीन महा।।
दीन सु क्यों द्विति छत्र हन्यो, बिन प्राणन हैहयराज कियो।

4. प्रश्नोत्तरमूलक संवाद – प्रश्नोत्तरमूलक संवादों के माध्यम से केशव ने पात्रों की भावना एवं काव्य–कला का सुन्दरतम समन्वय किया है। इस प्रकार के संवादों में नाटकीयता एवं महान प्रभावोत्पादकता का समावेश होने लगता है। इस दृष्टि से इस महाकाव्य में हनुमान–रावण संवाद एवं अंगद–रावण संवाद अति आकर्षक बन पड़ा है।

5. व्यंग्यात्मक संवाद – ऐसे संवादों में उक्ति वैचित्र्य व पूर्ण चमत्कार दृष्टिगोचर होते हैं जो अक्सर रुचिकर एवं प्रभावकारी होते हैं। अंगद–रावण एवं परशुराम–लक्ष्मण संवाद में इस प्रकार की विशेषताएं स्वतः दिखाई देती है। इसी प्रकार राम व परशुराम का संवाद भी महत्त्वपूर्ण है –

राम– भृगुकुलकमल दिनेश सुनि, ज्योति सकल संसार।
क्यों चलिहैं इन सिसुन पै डारत हौं जस भार।।
परशुराम– राम! सुबन्धु संभारि, छोडत हौं सर प्रान हर।
देहु हश्यारन डारि, हाथ समेतन बेगि दे।।

6. भावानुकूल संवाद – 'रामचन्द्रिका' में पात्रों के आन्तरिक भावों को सशक्त अभिव्यक्ति देने में केशव के संवाद सफल रहे हैं। इस दृष्टि से परशुराम–राम–लक्ष्मण संवाद अत्यन्त जीवन्त हैं। जब शिव धनुष भंग हो जाने पर परशुराम क्रोधित हो उठते हैं और अपने शौर्य का बखान करते हैं तो लक्ष्मण व्यंग्य करते हैं जिससे उनकी क्रोधाग्नि और अधिक तीव्र हो जाती है –

परशुराम– लक्ष्मण के पुरखान कियौ,
पुरुषारथ सो न कहयो परई।
वेश बनाइ कियो वनितानि को,
देखत केशव ह्यौ हरई।।
कूर कुठार निहारि तजै फल,
ताकौ यहै जो हियो जरई।
आज ते केवल ताको महाधिक,
छत्रिन पै जो दया करई।।

इस कथन पर राम उनके क्रोध को शान्त करने का प्रयास करते हैं साथ ही उनके शौर्य की प्रशंसा भी करते हैं किन्तु इस बात पर परशुराम शान्त नहीं होते हैं अपितु वे राम की गुरुता पर कटाक्ष करने लगते हैं

राम कहा करिहो तिनकौ
तुम बालक देव अदेव डरै हैं।
गाधि के नन्द तिहारे गुरु
जिन यों ऋषि वेश किये उबरे हैं।।

परशुराम के इस आक्षेप पर राम क्रोधित होकर कहते हैं –

भगन भयो हर धनुख सालै तुमको अब सालै।
वृथा होइ विधि सृष्टि ईस आसन ते चालै।।

7. कूटनीतिक संवाद – केशव की 'रामचन्द्रिका' में कूटनीति का भी सुन्दर पुट समाहित है जिसका सुन्दर उदाहरण रावण–अंगद संवाद है। रावण अंगद की भावनाओं को भड़काकर उसे राम का विरोधी बनाने का प्रयास करता है किन्तु रावण अपनी चाल में सफल नहीं हो पाता है अंगद भी रावण की कूटनीतिक चाल का कठोर उत्तर देते हैं –

रावण– जो सुत अपने बाप को बैर न लेई प्रकास।
ताषो जीवित ही मरयो लोक कहैं तजि आस।।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

अंगद– इसको विलगि न मानिये कहि केशव पलु आधु।
पानी पावक पवन प्रभु, ज्यों असाधु त्यों साधु।।

8. परिचयात्मक संवाद – 'रामचन्द्रिका' में ऐसे संवाद काफी मात्रा में हैं। जनक–विश्वामित्र संवाद, हनुमान–राम संवाद में पात्र परस्पर अपना परिचय देते हैं –

राम– पुत्र श्री दशरथ के वन राज्य शासन आइयो।
राम–लक्ष्मण नाम संयुत सूर्य वंश बखानियो।।
हनुमान– या गिरि पर सुग्रीव नृप ता संग मैत्री चारि।
बानर लई छडाई तिय, दीन्हीं बालि निकारि।।
रावण– कौन हौं, पठये सौं कौने ह्याँ तुम्हें कह काम है?
अंगद– जाति वानर, लंक नायक दूत, अंगद नाम है।

ऐसे संवादों से पात्रों के परिचय के साथ–साथ कथानक में गत्यात्मकता का संचार भी हुआ है।

9. नाटकीय संवाद – इस प्रकार के संवादों में पात्रों के हाव–भाव व्यक्त करने की क्षमता होती है। केशव ने अपने ग्रन्थ में पर्याप्त नाटकीयता समाहित की है जिससे उनके हाव–भाव पाठकों को मोहित करने के साथ–साथ बोध–वृत्ति में भी सहायक सिद्ध हुए हैं– रावण के दरबार में प्रतिहारी के द्वारा स्तुतिगान में यह भाव दृष्टव्य है –

पढौ विरंची! मौनि वेद जीव! सौंर छाडि रे।
कुबेर! बैर के कही, न यच्छ भीड़ माँडि रे।।
दिनेस! जाइ दूरि बैठि नारदादि संग ही।
न बाल नन्द! मन्द बुद्धि इन्द्र की सभा नहीं।।

इस स्तुति में ऐसा लगता है जैसे पात्र कथन के साथ–साथ अभिनय भी कर रहे हों।

10. आध्यात्मिक संवाद – 'रामचन्द्रिका' में कुछ संवाद इस प्रकार के हैं जिनमें आध्यात्मिक तत्त्वों का विश्लेषण भी मिलता है। जब कोई भी दो पात्र अध्यात्म पर परस्पर विचार–विमर्श करते हैं तो उसमें जिज्ञासावृत्ति शान्त हो जाती है। प्रस्तुत ग्रन्थ में राम व गुरु वसिष्ठ का संवाद कुछ इसी प्रकार का है जिसमें राम अपने गुरु वसिष्ठ से मुक्त जीवों की परिभाषा पूछते हैं, तदुपरान्त गुरु वसिष्ठ भी उनकी जिज्ञासा का शान्त करते हैं।

राम– जीव बंधे सब अपनी माया।
कीन्ह कुकर्म मानो बचकाया।।
जीवन वित्त प्रबोधन आनो।
जीवन मुक्त को मर्म बखानो।।
वसिष्ठ–बाहर हूं अनि शुद्ध हिये हूं।
जाहि न लगत कर्म किये हूं।।
ता कहं जीवन मुक्त बखानो।

निष्कर्ष – अन्त में हम यह कह सकते हैं कि 'रामचन्द्रिका' में की गई संवाद–योजना निश्चय ही स्तुत्य है। इसमें सर्वत्र एक सजीव चेतना अन्तर्निहित है और कुण्ठित भावधारा दिखाई नहीं है। संवाद योजना की मौलिकता व शिल्प चमत्कार से काव्य में अनूठापन आ गया है।

प्रश्न 4 'भूषण बिन न बिराजई, कविता वनिता मित्त।' प्रस्तुत पंक्ति के आलोक में कवि केशव की अलंकार योजना पर प्रकाश डालिये।

उत्तर – रीतिकालीन आचार्यों में कवि केशव का नाम पूर्ण सम्मान के साथ याद किया जाता है। वस्तुतः 'केशव कवि बाद में हुए, आचार्य पहले थे। यह तथ्य उनकी रचनाओं में स्वतः स्पष्ट होने लगते हैं। आचार्य केशव के परिवार की एक महती विशेषता यह रही है कि वहाँ वाग्व्यवहार में संस्कृत भाषा का सुन्दर प्रयोग होता है। यह भी कहा जाता है कि केशव के परिवार की शुक–सारिकाएँ भी संस्कृत भाषा का प्रयोग करती थी। यही प्रमुख कारण रहा है कि उन्हें संस्कृत के अध्ययन के लिये पारिवारिक प्रश्रय मिला था। उन्होंने घर पर रहकर ही भामह, रुद्रट, वामन, दण्डी आदि प्रमुख आचार्यों के बारे में विस्तृत अध्ययन किया। इस वजह से उन पर संस्कृत के आचार्यों का

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अलंकारवादी दृष्टिकोण हावी रहा और वे अपनी कविता कामिनी को तथा अपने काव्य को अलंकारों से विभूषित करते थे और इस प्रवृत्ति को वे कवि की परम कसौटी मानते **थे। 'न कान्तमपि निर्भूषं विभाति वनितानानम्'** आचार्यत्व की इस उक्ति के कट्टर पक्षधर थे। इसलिये उन्होंने 'कविप्रिया' के प्रारम्भ में अपना मत प्रकट किया –

'जदपि सुजाति सुलच्छनी, सुबरन सरस सुवृत्त।
भूषण बिनु न बिराजई, कविता, वनिता, मित्त।।'

आचार्य केशव काव्य की चारुता के लिये उक्ति चमत्कार की प्रवृत्ति को सर्वोपरि मानते थे। अलंकारिक धारणाओं की विस्तृत विवेचना उन्होंने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'कविप्रिया' में की है। वे इस प्रवृत्ति के प्रथम आचार्य बने और उदाहरण ग्रन्थ के रूप में उन्होंने 'रामचन्द्रिका' का प्रणयन किया। उन्होंने 'कविप्रिया' में एक स्थान पर इस तथ्य को स्पष्ट भी किया है कि वे स्वाभाविक शृंगार को अलंकारों के द्वारा बिगाड़ने के पक्षधर नहीं थे।

उनका मत है कि यदि रचना स्वयं चमत्कारपूर्ण है तो या अल्पालंकारों से ही काव्य चमत्कृत हो जाये तो अतिशय अलंकारों की कोई आवश्यकता नहीं है। क्योंकि अतिशय के कारण विकृति भी संभव है। कविता कामिनी गें अलंकारों का स्वाभाविक व राहज प्रयोग होना चाहिये। यद्यपि अपनी रचना 'रागचन्द्रिका' गें इरा रिद्धान्त कापालन करने का प्रयास किया गया है किन्तु अतिशय पाण्डित्य प्रदर्शन के कारण, उनकी रचना अलंकारों से बोझिल बन गई है इसी वजह से राम–वन–गमन, सौन्दर्य–चित्रण एवं प्रकृति–चित्रण जैसे प्रसंगों में उनके अतिशय अलंकारों के कारण नीरसता आ गई है जिसकी वजह से उन्हें आलोचकों ने 'कठिन काव्य का प्रेत' और 'हृदयहीन कवि' जैसी संज्ञाएँ प्रदान की हैं।

आचार्य केशव और अलंकार

आचार्य कवि केशव ने अपनी काव्य रचनाओं में दोनों ही प्रकार के अलंकारों का प्रयोग किया है। वैसे उनकी इच्छा अनुप्रास, यमक और श्लेष अलंकारों की ओर अधिक रही है। इसका कारण उनकी चमत्कार प्रवृत्ति है। इन अलंकारों के अतिरिक्त पुनरुक्ति, वीप्सा, वक्रोक्ति, उपमा, उत्प्रेक्षा, रुपक, अतिशयोक्ति, दृष्टान्त, परिकर आदि अलंकारों का भी काफी प्रयोग किया गया है। यथा –

1. श्लेष अलंकार का प्रयोग – श्लेष अलंकार का अधिक प्रयोग करने से रचनाएँ क्लिष्टार्थक बन गई हैं। तीन–तीन, चार–चार, पाँच–पाँच अर्थों वाले श्लेष लिखना तो उनके लिये एक सामान्य सी बात थी।

'विधि के समान है विमानीकृत राजहंस,
विविध बिबुध युत मेरु सी अचल है।
दीपति दिपति अति सातो दीपि दिपियतु,
दूसरो दिलीप सो सुदक्षिणा बल है।'

प्रस्तुत पंक्ति में राजहंस का अर्थ दो प्रकार से निकलता है ब्रह्मा की सवारी का हंस और राजा श्रेष्ठ। 'सुदक्षणा' शब्द का अर्थ भी उत्तम दान–दक्षिणा और दिलीप की पत्नी से भी है।

2. अनुप्रास अलंकार का प्रयोग – आचार्य कवि केशव ने अपनी रचनाओं में वर्णों की आवृत्ति से चमत्कार उत्पन्न करने का कई स्थानों पर प्रयास किया है। 'रामचन्द्रिका' में भी यत्र–तत्र अनुप्रास अलंकार का प्रयोग किया गया है जिससे कई स्थानों पर तो इस अनुप्रास से अनुपम नाद–सौन्दर्य उभारा गया है।

सब जाति फटी दुःख की दुपटी, कपटी न रहे जह एक घटी।
निघटी रुचि मीचु घटी हुँ घटी, जगजीव जतीन की छूटी तटी।।

प्रस्तुत पंक्तियों में पंचवटी के प्राकृतिक सौन्दर्य को 'ट' वर्ण की आवृत्ति से चमत्कारिक किया है।

3. यमक अलंकार का प्रयोग – आचार्य केशव ने शब्दों की बार–बार आवृत्ति कर यमक सौन्दर्य की अनुपम छटा अपनी रचनाओं में बिखेरी है। उनकी 'रामचन्द्रिका' में कई ऐसे छन्द हैं जिनमें यमक अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया गया है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

'सिय को कछु सोधु कह्यो करुनामय, हे करुणा करिकै।'

प्रस्तुत उदाहरण में प्रथम 'करुणा' का अर्थ 'वृक्ष' और अन्य का अर्थ 'दया' है।

4. वक्रोक्ति अलंकार का प्रयोग – कवि केशव ने वक्रोक्ति अलंकार के दोनों प्रकारों का सुन्दर वर्णनात्मक प्रयोग किया है –

'गिरिराज ले गुरु जानिये सुरराज को धनु हाथ लै।
सुख पाय ताहि चढ़ाय कै धर जाहि रे यश साथ लै।।'

कवि केशव की अलंकार अतिशयता ने काव्यार्थ की गति को काफी अवरूद्ध किया है उसमें चारूत्व की अपेक्षा क्लिष्टता की वृद्धि हुई है। केशव ने उगते हुए सूर्य के लिए 'शोणित–कलित–कप्पल' की उत्प्रेक्षा की है और वन में जाते हुए राम को 'ठग–चोर' तक कह दिया है। रणक्षेत्र के रक्त में डूबे हुए हाथी– घोड़ों को 'पान की पीक' में पड़ी 'कपूर की किरणों' के रूप में वर्णित किया गया है। इस प्रकार अलंकारों के व्यामोह ने केशव का काव्य कठिन व रसहीन बना दिया है – जैसे

'शुभ्रद्रोणगिरि मणि–शिखर ऊपर उदित औषधि–सी गनों।
बहु शत मख धूमनि धूपित अंगनि हरि की सी अनुहारी।।'

उत्प्रेक्षा अलंकारों का प्रयोग

व्योम में मुनि देखिजै अति लाल श्री मुख साजही।
सिंधु में बडवाग्नि की जनु ज्वाल माल विराजिही।।
चिन्तामणि सी मणी दई, रघुपति कर हनुमंत।
सीता जू को मन रंग्यो जनु अनुराग अनन्त।।

रुपक अलंकार का प्रयोग

शोक की आगि लगी परिपूरण आइ गये घनश्याम बिहाने।
जानकी की जनकादिक के सब फूलि उठे तरु–पुण्य पुराने।।

प्रतीक अलंकार का प्रयोग –

हयशालन हय घेरि लियो, शशि वर्ण सो केशव शोभ रयो।
श्रुति शामल एक विराजतु है, अलि क्यों सरसिरुह लाजतु है।।

गुढोत्तर अलंकार का प्रयोग – कवि ने इस अलंकार के माध्यम से गूढ कथन की ओर संकेत कर काव्य में चमत्कार उत्पन्न किया है –

परशुराम – यह कौन को दल देखियो।
वामदेव – यह राम को प्रभु लेखियो।
परशुराम – कहि कौन राम न जानि हौ।
वामदेव – सर ताड़का जिन मारियो।

पीहित अलंकार का प्रयोग

नारायण को धनु–बाण लियो।
ऐच्यों हँसि देखन मोद कियो।।
रघुनाथ कहेऊ अब काहि हमौ।
त्रेलोक्य कप्यो भय मानि घनौ।।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

विरोधाभास अलंकार का प्रयोग

विषमय यह गोदावरी, अमृतनि के फल देति।
केशव जीनहार के दुःख अशेष हरि लेति।।

प्रस्तुत उदाहरण में गोदावरी नदी के वर्णन में विरोधाभास है।

अपह्नुति अलंकार का प्रयोग – कवि केशव ने आमेय का निगरण कर अन्य वस्तु को उपमान रूप में चित्रित कर काव्य में रोचकता उत्पन्न करने का प्रयास किया है –

भट चातक दादर मोर न बोले।
चपला चमकै न, फिर खग बोलें।।

यथासंख्य अलंकार का प्रयोग – प्रस्तुत उदाहरण में केशव ने क्रमिक रूप में वस्तु का क्रिया के साथ अन्वय कर रोचकता उत्पन्न करने का प्रयास किया है –

कल हंसकलानिधि कंजन, कंज कछु दिन केशव देखि जिये।
गति आनन, लोचन, पायन के अनुरूपक से मन मान लियो।।

अर्थान्तरन्यास अलंकार का प्रयोग – इस अलंकार में सामान्य कथन का विशेष कथन से अथवा विशेष कथन का सामान्य उक्ति से समर्थन किया जाता है, जिसका उपयोग केशव ने किया है –

दुःख देखे सुख होइगो, सुख न दुःख विहीन।
जैसे तपसी तप तपै, होत परम पद लीन।।

दृष्टान्त अलंकार का प्रयोग – सधर्म वस्तुओं में बिम्ब–प्रतिबिम्ब भाव के द्वारा काव्य में चमत्कार उत्पन्न किया गया है –

एक रंक मारे तथों बडी कलंक लीजई।
बुन्द सूखि गो कहा महा समुद्र छीजई।।

उदात्त अलंकार का प्रयोग – किसी उदात्त वस्तु या अलौकिक वैभव का वर्णन किया जाये –

'महामीचु दासी सदा पाई धोवैं।
प्रतिहार है कै कृपा सूर जीवै।।
कृपानाथ लीन्हें रहै छत्र जाको।
करैगो कहा सत्रु सुग्रीव ताको।।

व्याजस्तुति अलंकार का प्रयोग – निन्दा के माध्यम से स्तुति या स्तुति के व्याज से निन्दा करके काव्य में आकर्षण उत्पन्न किया जाता है – कवि ने व्याजस्तुति अलंकार का सुन्दर प्रयोग कर अपने काव्य में रोचकता उत्पन्न की है –

उरै गाय विप्रै अनाथै जो भाजै।
पर दृव्य छाडै पर स्त्रीहिं लाजै।।
पर द्रोह जासो न होवै रति को।
सु कैसे लरै देव कीन्हे यति को।।

काव्यलिंग अलंकार का प्रयोग – कवि केशव ने अपनी प्रमुख कृति 'रामचन्द्रिका' में इसका पर्याप्त प्रयोग किया है। जब वाक्यार्थ में समर्थन की अपेक्षा करने वाली अस्पष्ट बात का अन्य अर्थ में समर्थन किया जाये। जैसे –

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

बर बाण शिखिन अशेष समुद्रहि सोखि सखा सुख ही तरिहौं।
अरु लंकहि और कलंकित की पुनि पंक कलंकहि को भरिहौं।।
भल भूंजि के राख सुखै करि कै दुःख दीरघ देवन के हरिहौं।
सिति कंठ के कंठहि को कंछुला दसकंठ के कंठन को करिहौ।।

विभावना अलंकार का प्रयोग – यह अलंकार आचार्य केशव का प्रिय रहा है। बिना कारण के कार्य की उत्पत्ति बताना बिभावना अलंकार होता है। कवि ने रघुवंशियों के प्रलाप का वर्णन इसी अलंकार के साथ किया है –

यद्यपि ईंधन जरि गये, अरिगण केशवदास।
तदपि प्रतापानल के, पल–पल बढत प्रकास।।

परिसंख्या अलंकार का प्रयोग – आचार्य केशव ने अवधपुरी व भारद्वाज आश्रम वर्णन में तथा राम राज्य वर्णन में इस अलंकार का प्रयोग किया है। इस अलंकार में अन्य वस्तुओं में प्रतिपाद्य वस्तु का नियमन अथवा अभावात्मक चित्रण किया जाता है –

मूलन की ही जहाँ अधोगति केशव गाइय।
होम हुताशन धूम नगर एकें मलिनाइय।।
दुगति दुर्जन ही जु कुटिल गति–सरितन में।
श्रीफल को अभिलाष प्रकट कवि कुल के जी में।।

2.3 निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि निश्चित रूप से केशव कट्टर अलंकारवादी आचार्य थे। पाण्डित्य प्रदर्शन और चमत्कारी प्रवृत्ति होने से केशव का काव्य यद्यपि अलंकृत है तथापि उसमें कुछ स्थानों पर अनौचित्य भी आ गया है। उपमानों का अनुचित प्रयोग, कवि प्रसिद्धि की अवहेलना और ऐतिहासिक क्रम का विपरीत वर्णन कर केशव ने उसे पूर्णतः शोभायमान नहीं किया है। किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि उन्होंने अपनी कृति में अलंकारों का विवेचन अपने काल की परिस्थितियों, परम्पराओं एवं वातावरण से प्रभावित होकर किया है। अतः अलंकारवादी आचार्य का अलंकार योजना काफी समृद्ध व प्रभावोत्पादक है।

2.4 अभ्यास प्रश्नावली

1. क्या केशव को कठिन काव्य का प्रेत कहा जाता है।
2. रामचन्द्रिका के काव्यगुण को स्पष्ट कीजिए।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun